भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 6 | **सितम्बर** 2005 | **अंक** 9

दुनिया को समझने के लिए पढ़िए किताबें

मेरा जन्म एक बहुत छोटे और पिछड़े हुए कस्बे मैनपुरी में हुआ था। किताबें वहाँ मिलती नहीं थीं। एकाध पुस्तकालय थे, जहाँ पत्रिकाएँ मिल जाती थीं और उन्हें हम पढ़ते थे। मगर पहले पहल मैंने जो किताबें पढ़ीं, वे हिन्दी, उर्दू, इतिहास और भूगोल की पाठ्य-पुस्तकें थीं। ये किताबें मुझे अच्छी लगती थीं और इन्हें मैं बड़े चाव से पढ़ता था।... थोड़ा बड़ा हुआ तो मैंने कुछ ऐसी किताबें पढ़ीं जो सस्ते दामों में पटरियों पर मिलती थीं। ये लोककथाओं की किताबें थीं। इनमें 'किस्सा हातिमताई', 'किस्सा तोता-मैना' और इसी तरह की अन्य पुस्तकें। इनमें 'किस्सा हातिमताई' मुझे पसन्द आयी। ...फिर जो किताबें मुझे पढ़ने को मिलीं वे राधेश्याम कथावाचक, बेताब और आगा हश्र कश्मीरी के नाटक थे। इनमें 'सावित्री-सत्यवान', 'सत्य हरिश्चन्द्र' जैसे नाटक मुझे याद हैं। एक और किताब 'गुलबकावली' मैंने पढ़ी। पता नहीं वह उपन्यास था कि नाटक। उसके बाद मैंने 'चन्द्रकांता' पढ़ी, जो मुझे बेहद भाया।

आगे चलकर 'सिंदबाद जहाजी' और 'गुलीवर्स ट्रेवल्स' जैसी क्लासिक कृतियों के अनुवाद पढ़े। सिंदबाद जहाजी ने मुझे बेहद प्रभावित किया। सिंदबाद की साहसिक यात्राओं के बारे में पढ़कर दुनिया को देखने-समझने की गहरी लगन पैदा हो गयी। उसके बाद इलाहाबाद आए तो ढेर सारी किताबें पढ़ने के लिए मिलने लगीं। उन्हीं दिनों मैंने 'भारतीय पुरातत्व का इतिहास' और 'भारतीय संस्कृति का इतिहास' जैसी पुस्तकें पढ़ीं। भारतीय संस्कृति की पुस्तकें मुझे खास तौर पर आकर्षित करती रही हैं और इसके लिए मैं वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ० कौशाम्बी और राहुल सांकृत्यायन जैसे लेखकों का आभारी रहा हूँ। फिर बौद्ध धर्म के प्रति आँख खुलने से तिब्बत की त्रासदी की ओर ध्यान गया। सोवियत यूनियन से आने वाली अनूदित कृतियाँ भी उन दिनों मैंने खूब पढ़ीं। टॉलस्ताय, गोगोल, चेखव, गोर्की, दॉस्तायव्स्की को पढ़ा। फिर फ्रेंच मास्टर्स वाल्तेयर और रूसो को पढ़ा। फ्रांस की राज्य क्रान्ति के बारे में किताबें पढ़ीं। प्रेमचंद को तो मैंने बहुत बाद में पढ़ा। ईमानदारी की बात कहूँ तो प्रेमचंद को मैंने विधिवत तौर पर एम०ए० की पढ़ाई के दौरान पढ़ा।

शेष पृष्ठ 5 पर

मेरे बच्चे, तुम्हें क्या पढ़ना है, हम सुनिश्चित कर दें, तभी तुम पढ़ना शुरू कर सकते हो।

'द हिन्दू' से साभार

व्याकरण की जरूरत

हमारी संप्रग सरकार शिक्षा के प्रति अत्यन्त जागरूक है। राष्ट्रीय शैक्षिक एवं अनुसन्धान परिषद (एन०सी०आर०टी०) ने नया राष्ट्रीय पाठ्यक्रम फ्रेमवर्क तैयार किया है। यह पाठ्यक्रम पिछली सरकार द्वारा रचित तथाकथित अंधकूप से निकाल कर ज्ञान का नवीनतम आलोक प्रदान करेगी। यह पाठ्यक्रम आधुनिकतम पाश्चात्य ज्ञान से समृद्ध इतिहासकारों शिक्षाविदों तथा साहित्यकारों की कमेटी ने बनाया है। कमेटी ने पाँच सौ पृष्ठों में गहन अन्वेशण और विचार-विमर्श के पश्चात अपनी रिपोर्ट केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड को दी है। रिपोर्ट में पाँच अध्याय हैं—

(1) शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण, (2) अध्ययन अध्यापन और ज्ञान, (3) पाठ्यक्रम का क्षेत्र, कक्षाएँ और उनका आकलन, (4) विद्यालय और कक्षा का परिवेश और (5) परीक्षा-प्रणाली में सुधार।

इस रिपोर्ट में शिक्षा में न्याय, समानता, स्वतंत्रता, धर्म-निरपेक्षता, मानवीय गरिमा और अधिकार की भावना पर विशेष रूप से विचार गिया गया है। यह पाठ्यक्रम तुम्हें ज्ञान के नवप्रभात से आलोकित करेगा। इस सन्दर्भ में संप्रग सरकार पूरी निष्ठा से अपने धर्म का निर्वाह कर रही है। पिछली केन्द्रीय सरकार ने इतिहास में साम्प्रदायिकता का जो विषय चयन किया था, उसे साफ कर इतिहास के धर्म-निरपेक्ष तत्त्वों को उजागर किया जा रहा है। पिछली सरकार द्वारा निर्धारित पाठ्य-पुस्तक 'प्राचीन भारत' में कहा गया था कि ''आर्य लोग मूल रूप

शेष पृष्ठ 2 पर

सम्मान-पुरस्कार

अम्बिकाप्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कार

5000/-रुपये राशि का प्रथम दिव्य पुरस्कार, पन्ना म०प्र० के उपन्यासकार श्री अश्विनी कुमार दुबे को उनके उपन्यास 'शेष अंत में' के लिए, 2100 रुपये राशि का द्वितीय दिव्य पुरस्कार भीमताल के कथाकार श्री गम्भीर सिंह पालनी की कहानी पुस्तक 'मेंढक' के लिए तथा 2100 रुपये राशि का तीसरा दिव्य पुरस्कार हरदा के कवि डॉ० प्रेमशंकर रघुवंशी को उनकी काव्य कृति 'नर्मदा की लहरों से' के लिए प्रदान किये जायेंगे। इनके अलावा 19 रचनाकारों—डॉ० बी० कुमारन (कन्नूर), डॉ० नीलम कुलश्रेष्ठ (बड़ौदा), श्री जयप्रकाश मानस एवं श्री संजय द्विवेदी (रायपुर), श्री दिनेश चमोला शैलेश (देहरादून), श्रीमती गीतिका गोयल (जयपुर), श्री रमाकांत (रायबरेली), श्री सागर होशियारपुरी (इलाहाबाद), डॉ० इसाक अश्क (तराना), डॉ० महेन्द्र करवड़े, श्री कमलचंद वर्मा, एवं श्री सतीष दुबे (इन्दौर), श्री प्रबोधकुमार गोविल (वनस्थली), आचार्य भगवानदेव चैतन्य (मण्डी) एवं श्रीमती प्रभा माथुर (पूना) को उनकी श्रेष्ठ कृतियों के लिए प्रतिष्ठापूर्ण अम्बिकाप्रसाद दिव्य रजत अलंकरण प्रदान किये जायेंगे।

कथाकार जयनंदन तथा कवि यतीन्द्र मिश्र पुरस्कृत

हिन्दी के प्रतिष्ठित कथाकार जयनंदन को इस वर्ष का विजय वर्मा कथा-सम्मान और चर्चित युवा कवि यतीन्द्र मिश्र को हेमंत स्मृति पुरस्कार दिया जायगा।

पुरस्कार के संयोजक हिन्दी आलोचक एवं 'हंस' के स्तम्भकार भारत भारद्वाज के अनुसार सातवाँ विजय वर्मा कथा सम्मान जयनंदन को उनके कहानी संग्रह 'कस्तूरी पहचानो, वत्स।' पर दिए जाने का निर्णय चयन मण्डल के सदस्य डॉ० काशीनाथ सिंह, विभूति नारायण राय और भारत भारद्वाज द्वारा सर्वसम्मति से किया गया है। यतीन्द्र मिश्र को चौथा हेमंत स्मृति पुरस्कार उनके कविता संग्रह 'अयोध्या और अन्य कविताएँ' पर दिए जाने की अनुशंसा वीरेन्द्रकुमार बरनवाल, सुरेश सलिल और बोधिसत्त्व ने की है।

पुरस्कार की प्रशस्ति में कहा गया है कि जयनंदन की कहानियाँ गाँव के दु:ख-दर्द में शामिल ही नहीं होतीं, ग्रामीण परिवेश के मन-प्राण में भी झाँकती हैं। यतीन्द्र मिश्र की कविताएँ अपने समय की पहचान साम्प्रदायिक शक्तियों का प्रतिरोध करते हुए करती हैं।

ये दोनों पुरस्कार 3 दिसम्बर को मुम्बई में आयोजित एक समारोह में मुख्य अतिथि हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार एवं 'वागर्थ' के सम्पादक रवीन्द्र कालिया तथा गुजराती के प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं पूर्व कुलपति बलवंत जानी के हाथों प्रदान किए जाएँगे। पुरस्कार की राशि पाँच हजार रुपये है।

पृष्ठ 1 का शेष

से भारत के ही निवासी थे और वे कहीं बाहर से नहीं आये थे।'' हमारी संप्रग सरकार के वामपंथी वैज्ञानिकों ने आनुवंशिक खोज के आधार पर यह प्रमाणित किया है कि हिन्दू आर्य मध्य एशिया से भारत की ओर आए। आनुवंशिक लक्षण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानान्तरित होते हैं। इससे यह भी प्रमाणित होता है कि हमारे इतिहासकारों में कार्लमार्क्स के आनुवंशिक लक्षण हैं। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के इतिहास के प्रोफेसर नीलाद्रि भट्टाचार्य उसी आनुवंशिक परम्परा के हैं।

प्रो० रामशरण शर्मा की 'प्राचीन भारत' नामक पुस्तक में प्रस्तुत है—''घर का प्रत्येक व्यक्ति अग्नि में आहुति देता था। यज्ञ में बड़े पैमाने पर पशुबलि दी जाती थी। अतिथि 'गोहन' कहलाते थे क्योंकि उन्हें गोमांस खिलाया जाता था।'' ऐसे विवादी तथ्य के लिए प्रमाण देना चाहिए, परन्तु कोई प्रमाण नहीं। इससे यह कहना चाहते हैं कि गोमांस-भक्षण हमारे देश की प्राचीन परम्परा रही है, यदि कोई समाज गोमांस खाता है तो उस पर बवेला क्यों? रही भाषा की बात। इस देश में अनेक भाषाएँ हैं, विभिन्न प्रदेशों की भिन्न भाषाएँ हैं, उनमें विवाद न हो, कोई यह न समझे कि किसी पर कोई भाषा लादी जा रही है, इसलिए हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार नहीं की गई। अंग्रेजों की अंग्रेजी ने सैकड़ों वर्ष तक इस देश पर राज्य किया, उस अंग्रेजी का रंग इतना गहरा चढ़ गया कि आज वैश्वीकरण के युग में और गहरा होता जा रहा है।

एन०सी०आर०टी० ने हिन्दी के पाठ्यक्रम में हिन्दी साहित्य का इतिहास और व्याकरण की पुस्तकें अलग से न पढ़ाने का निश्चय किया है।

धर्मनिरपेक्षता और साम्प्रदायिकता से बचने के लिए संप्रग सरकार के लिए यह जरूरी भी हो गया है। हिन्दी साहित्य का इतिहास घोर साम्प्रदायिक है। सूर, तुलसी, मीरा ये सभी साम्प्रदायिक हैं, धर्मनिरपेक्ष कोई है तो केवल कबीर, जिसने कहा था—जो घर फूँके आपना चले हमारे साथ। यह सरकार कबीर के आदर्शों पर चल रही है। हिन्दी साहित्य रीतिकाल के लिए प्रसिद्ध है। राजदरबारों में दरबारी कवि और साहित्यकार होते थे। उस परम्परा का निर्वाह यह सरकार कर रही है, अनेक कवियों, साहित्यकारों, कलाकारों का पोषण करती है। व्याकरण? व्याकरण की क्या जरूरत? क्या भाषा व्याकरण से चलती है? क्या आज समाज का कोई व्याकरण है? कोई आचारसंहिता है? क्या सरकार व्याकरण (संविधान) से चलती है? समय, अवसर और परिस्थिति के अनुसार अपना व्याकरण गढ़ा जाता है, यही व्यावहारिकता और समय का तकाज़ा है। बिहार में निर्वाचित विधायकों को बर्खास्त कर अवसर और परिस्थिति के अनुसार व्याकरण को तोड़ा गया। यदि इस पर किसी को आपत्ति है तो संविद सरकार विधिवत नया व्याकरण गढ़ने में देर नहीं करेगी।

— पुरुषोत्तमदास मोदी

विश्वविद्यालयों पर राजनीति का ग्रहण

उत्तर प्रदेश में प्रत्येक राजनीतिक दल सत्ता में आने पर अपने नेताओं को अमर करने के लिए विश्वविद्यालयों का नामकरण उनके नाम पर कर देते हैं। मायावती ने आगरा विश्वविद्यालय का नाम बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, कानपुर विश्वविद्यालय का नाम छत्रपति शाहूजी विश्वविद्यालय किया। भाजपा ने गोरखपुर विश्वविद्यालय का नाम दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय कर दिया। आज देश में बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर के नाम पर सात विश्वविद्यालय हैं। लखनऊ, मुजफ्फरपुर, हैदराबाद, औरंगाबाद, अहमदाबाद, लोनेरो (महाराष्ट्र) और आगरा।

अब लखनऊ विश्वविद्यालय की बारी है। सपा मुख्यमंत्री लखनऊ विश्वविद्यालय का नाम चन्द्रभानु गुप्त लखनऊ विश्वविद्यालय करना चाहते हैं। प्रश्न है लखनऊ बड़ा है या चन्द्रभानु गुप्त? गुप्तजी के प्रति आदर सहित कहना चाहेंगे कि क्या विश्वविद्यालय से उनका नाम जोड़ देने से वे अमर अजर हो जायेंगे। उत्तर प्रदेश के प्राचीनतम विश्वविद्यालयों में इलाहाबाद, लखनऊ और आगरा विश्वविद्यालय अपने नगर के नामों से जाने जाते हैं। पं० मदनमोहन मालवीय ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की, क्या मालवीयजी के नाम से विश्वविद्यालय का नामकरण कर दिया जाय। ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक और नैतिकता बोध से शून्य ये राजनीतिज्ञ देश को कहाँ ले जा रहे हैं?

प्रसन्नता की बात है उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम राज्यपाल श्री टी०वी० राजेश्वर ने प्रदेश सरकार के इस प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया है।

प्रेमचंद की 125वीं जयन्ती

प्रेमचंद की 125वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में प्रेमचंद साहित्य संस्थान, वाराणसी की ओर से 'प्रेमचंद को याद न करने का अर्थ' विषय पर प्रसिद्ध आलोचक डॉ० बच्चन सिंह की अध्यक्षता में गोष्ठी का आयोजन हुआ। डॉ० बच्चन सिंह ने कहा कि सभी कला माध्यमों को जोड़कर ही साहित्य पूर्ण हो सकता है। प्रेमचंद का रचना संसार इतना व्यापक है कि मानवीय संवेदना को अभिव्यक्ति देने वाली सभी कलाओं के लिए उसमें जगह बनती है। प्रेमचंद हर प्रकार की गुलामी से मनुष्य की मुक्ति के लिए जीवनपर्यन्त संघर्ष-रत रहे। अब यह हमारी जिम्मेदारी है कि उनके विचारों का क्रियान्वयन कैसे करें।

गोष्ठी के आरम्भ में विषय प्रवर्तन करते हुए आलोचक प्रो० अवधेश प्रधान ने कहा कि प्रेमचंद को याद करने का मतलब भारतीय स्वाधीनता संग्रमा और हिन्दी नवजागरण की सम्पूर्ण उपलब्धियों को याद करना है। आज लोकतंत्र, वैज्ञानिकता, आधुनिकता और वर्गीय संघर्षों को अप्रासंगिक सिद्ध किया जा रहा है। यूरोप के नवजागरण पर सवाल उठाए जा रहे हैं। भारत में बड़े नायकों और बड़े कलाकारों को अस्वीकार करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। सच्चाई यह है कि स्त्री जागरण, दलित विमर्श और मुस्लिम जागरण नवजागरण की ही देन है। प्रेमचंद हमें बताते हैं कि भारत का निर्माण किस प्रकार हो सकता है।

कवि अरविन्द चतुर्वेद ने कहा कि प्रेमचंद की प्रतिबद्धताओं और प्राथमिकताओं को जानना हमारे लिए जरूरी है। उन्हें मेले में ईदगाह मिल जाता है और कांजी हाउस में हीरा-मोती। इससे स्पष्ट है कि संवेदना की तलाश के लिए वे कितने सजग थे।

प्रो० सुरेन्द्र प्रताप ने कहा कि प्रेमचंद को व्यापक सामाजिक सन्दर्भों में देखने की जरूरत है। पूर्व मंत्री व समाजवादी नेता शतरुद्र प्रकाश ने कहा कि प्रेमचंद एक धारणा हैं। प्रेमचंद को याद करने का मतलब है भारत की गरीब जनता को याद करना। वे समता के आधार पर सम्पन्न भारत का निर्माण करना चाहते थे।

प्रसिद्ध मूर्तिशिल्पी डॉ० मदनलाल ने कहा कि प्रेमचंद को संवेदना की हमेशा तलाश रहती थी। आज ऐसी नीति बनानी चाहिए कि बच्चों में साहित्य पढ़ने की रुचि पैदा हो। चित्रकार डॉ० मृदुला सिन्हा ने कहा कि प्रेमचंद की कहानियों में संवेदना के धरातल पर बिम्ब बनाने की आवश्यक शर्तें मौजूद हैं। समाजवादी नेता फूलचन्द ने कहा कि प्रेमचंद ने जिन्दगी जीने के मार्गदर्शक तत्त्व निर्धारित किए। उन्होंने किसानों और खेतिहर मजदूरों की समस्याओं को हमारे सामने रखा।

विचार गोष्ठी के संचालन वक्तव्य में प्रो० सदानन्द शाही ने कहा कि आज पुरातन पंथी व्यवस्था के समर्थक उन शक्तियों को पचा नहीं पाते जो वर्ण व्यवस्था के विरोध में उठ खड़ी हुई हैं। प्रेमचंद ने हमें समाज को देखने की नई दृष्टि दी है।

इस विचार गोष्ठी में मूर्तिशिल्पी डॉ० मदनलाल, चित्रकार डॉ० मृदुला सिन्हा, समाजवादी नेता फूलचन्द सहित डॉ० रामसुधार सिंह, डॉ० अशोक पाठक, सुश्री संगीता श्रीवास्तव, डॉ० शैलेन्द्र, कपिलदेव, राकेश, डॉ० गायत्री माहेश्वरी आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। संस्थान के सचिव प्रो० बलराज पाण्डेय ने आभार व्यक्त किया।

प्रेमचंद जयन्ती समारोह

प्रेमचंद की 125वीं जयन्ती देश के विभिन्न नगरों में मनायी गयी।

हिन्दी अकादमी, दिल्ली ने तीन दिवसीय समारोह का आयोजन किया। समारोह का प्रारम्भ प्रेमचंद के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर हुआ। उद्घाटन संसद सदस्य श्री जनार्दन द्विवेदी ने किया।

'प्रेमचंद और आज का सन्दर्भ' संगोष्ठी की अध्यक्षता अकादमी के उपाध्यक्ष श्री मुकुन्द द्विवेदी ने की। डॉ० सत्यमित्र दुबे ने वक्तव्य प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र में संगोष्ठी का विषय था 'प्रेमचंद का रचना संसार'। अध्यक्षता डॉ० अर्चना वर्मा ने की, मुख्य वक्ता थे—श्री तुलसी रमण, डॉ० तेज सिंह, डॉ० वीर भारत तलवार तथा डॉ० दिलीप सिंह।

तृतीय सत्र की संगोष्ठी का विषय था—समसामयिक कथा साहित्य और प्रेमचंद। अध्यक्षता की कथाकार हिमांशु जोशी ने। मुख्य वक्ता थे—डॉ० जयप्रकाश कर्दप, डॉ० प्रेमपाल शर्मा।

चतुर्थ सत्र की संगोष्ठी का विषय था—'प्रेमचंद की उर्दू रचनाएँ'। अध्यक्षता की डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी ने। संगोष्ठी में भाग लिया डॉ० अथिक बालोत, डॉ० अब्दुल बिस्मिल्लाह ने।

अन्त में हिन्दी अकादमी के सचिव श्री नानकचंद ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

गुजरात विद्यापीठ में प्रेमचंद जयन्ती

गुजरात विद्यापीठ के महादेव देसाई समाजसेवा महाविद्यालय की हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० मालती दुबे की अध्यक्षता में कथा सम्राट 'मुंशी प्रेमचंद' की 125वीं जयन्ती मनायी गई।

इस अवसर पर डॉ० ओमानन्द सरस्वती ने कहा कि ''प्रेमचंदजी कथाकार नहीं एक कथा-चिन्तक थे। उन्होंने कहा—प्रेमचंद के चिन्तन तथा उनके साहित्य पर मीरां, नरसिंह मेहता, दयानन्द सरस्वती, गाँधीजी के विचारों का प्रभाव स्पष्टत: दिखलाई देता है, प्रेमचंदजी की 'नमक का दरोगा', 'आत्माराम', 'शतरंज के खिलाड़ी' आदि कहानियाँ इसके उदाहरण हैं।''उन्होंने गोदान के पात्र होरी के माध्यम से यह संदेश दिया कि मनुष्य को अपने जीवन में कभी हारना नहीं निरन्तर संघर्षों का सामना करना चाहिए।

इस अवसर पर डॉ० किशोर काबरा ने मानव-जीवन के दार्शनिक, धार्मिक और आध्यात्मिक पक्ष पर अपने विचार प्रस्तुत किए। अतिथि विशेष के रूप में उपस्थित गुजरात कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० सुभाष भदौरिया ने समकालीन परिस्थितियों को प्रेमचंद के कथा साहित्य से जोड़ते हुए 'ठाकुर का कुआँ', 'कफन', 'पूस की रात', 'गोदान' तथा 'निर्मला' में व्यक्त सामाजिक चेतना की चर्चा की।

इस अवसर पर श्री डॉ० रामकुमार गुप्ता, डॉ० किशोर काबरा, डॉ० द्वारिका प्रसाद साँचीहर, डॉ० यशवंत पंड्या, डॉ० दक्षाबहन साहित्यप्रेमी एवं विद्यार्थीगण बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अन्त में डॉ० यशवंत पंड्या ने हिन्दी विभाग और गुजरात विद्यापीठ की ओर से आभार व्यक्त किया।

प्रेमचंदजी का स्वाभिमान

अलवर के राजा बहुत अध्ययनशील थे। प्राचीन कथाओं के साथ-साथ वह वर्तमान समय के प्रख्यात लेखकों की कहानियाँ, कविताएँ तथा उपन्यासों का अध्ययन किया करते थे। मुंशी प्रेमचंदजी की कहानियों तथा उपन्यासों ने उन्हें बहुत प्रभावित किया। उन्हें किसी से प्रेमचंदजी की आर्थिक स्थिति के बारे में पता लगा। उन्होंने सोचा कि यदि इस महान लेखक को सपरिवार बुलवाकर ससम्मान अलवर में बसा लिया जाए, तो वह निश्चित होकर साहित्य सृजन कर सकेंगे। राजा ने भावपूर्ण शब्दों में पत्र लिखा, ''मैं आपकी कहानियाँ तथा उपन्यास बड़े चाव से पढ़ता हूँ। उन्होंने मुझे आपका भक्त बना दिया है। मैं चाहता हूँ कि आप हमारा आतिथ्य स्वीकार करें। आपको चार सौ रुपये मासिक भेंट किया जाएगा। रहने-सहने की सुविधा राज्य की ओर से मिलेगी। मुझे आप जैसे सुविख्यात लेखक का सान्निध्य प्राप्त करने में गर्व होगा।''

मुंशीजी ने पत्र पढ़ा और उसे अपनी पत्नी शिवरानी को दिखाया। उनकी पत्नी बोली, ''आपने कलम की मजदूरी से ही जीवन निर्वाह का संकल्प लिया है। राजा से सुख-सुविधाएँ लेकर क्या करेंगे?'' मुंशीजी ने राजा को जवाब लिखा, ''मेरे लिए यही बहुत है कि आप मेरी कहानियाँ तथा उपन्यास रुचि से पढ़ते हैं। क्षमा कीजिए, मैं आपकी पेशकश स्वीकार करने में असमर्थ हूँ।'' **—शिवकुमार गोयल**

'गोदान' को फिर से पढ़ते हुए

प्रेमचंद साहित्य संस्थान के निदेशक के अनुसार 8-10 अक्टूबर को वाराणसी में 'गोदान' को फिर से पढ़ते हुए' तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। इस गोष्ठी में देश-विदेश के तथा विभिन्न अनुशासनों के विद्वान गोदान का पुनर्पाठ करेंगे। इस अवसर पर प्रेमचंद की पाण्डुलिपियों की प्रदर्शनी लगायी जायेगी। प्रेमचंद को घर-घर पहुँचाने के उद्देश्य से पूर्वी उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों—गाजीपुर, बलिया, आजमगढ़, मऊ, बाराबंकी, फैजाबाद, देवरिया, कुशीनगर आदि में प्रेमचंद की प्रसिद्ध कृतियों गोदान, कफन, सदगति, सवासेर गेहूँ, ईदगाह आदि पर बनायी गयी पेटिंग शृंखला की प्रदर्शनी तथा प्रेमचंद पर चर्चाएँ भी आयोजित की जायेंगी। प्रो० शाही ने बताया कि इस उपलक्ष्य में संस्थान द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'साखी' का प्रेमचंद विशेषांक तथा 'गोदान' और 'कफन' पर स्वतंत्र पुस्तकें प्रकाशित की जायेंगी। इन पुस्तकों का लोकार्पण 31 जुलाई 2006 को किया जायेगा।

प्रेमचंद और तुलसी

प्रेमचंदजी में बड़े-बड़े दोष थे। मेरी दृष्टि में एक तो वे एक प्रकार से नास्तिक थे। जब वे बनारस के रामकटोरा मुहल्ले के अपने किराये के मकान में बीमार पड़े हुए थे, जलोदर ने गम्भीर रूप धारण कर लिया था, मैं एक रात लगभग 10 बजे उनके पास पहुँचा। उनकी बड़ी-बड़ी सुन्दर आँखें मुँदी पड़ी थीं। मेरी आहट पाकर आँखें खोल दीं और बोल उठे—''अरे, इतनी रात को कहाँ से चले आ रहे हो?''

''रामलीला देखकर आ रहा हूँ भाईसाहब।''

''अरे यार, एक बात तो बताओ, अगर तुलसी न पैदा होते तो यह राम कहाँ से आता?'' और यह कहकर ठहाका मारकर ह: ह: करने लगे। जब वे खूब मजे से हँसते थे तो दोनों हथेलियों को मिलाकर एक धमाका भी कर देते थे।

मैं सनातनी आदमी हूँ, मुझसे न रहा गया। मैंने कहा—''भाईसाहब, आप बीमार हैं। जरा भगवान को याद कीजिए; कष्ट कम होगा।''''वाह कष्ट तो डॉक्टर कम करेगा। क्या तुम भी जवानी में अल्ला मियाँ को पुकारने लगे।'' और इस वार्त्तालाप के ठीक पाँच दिन बाद उनका शरीर छूट गया।

—परिपूर्णानन्द वर्मा

''यदि प्रेमचंद न होते तो होरी न होता 'गोदान' न होता, 'लमही' इतिहास न बनता।'' प्रेमचंद ने देश की शाश्वत चेतना की अभिव्यक्ति की है।

प्रेमचंद का गाँव और उनके सपने

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद के गाँव लमही में पंचायत चुनाव को लेकर प्रत्याशियों में जबर्दस्त घमासान है। कुल ग्यारह प्रत्याशी मैदान में हैं और इनमें दस एक ही कुनबे के हैं। सभी एक दूसरे को परास्त करने में जुटे हैं। मुंशी प्रेमचंद के सपनों से किसी को कोई सरोकार नहीं है। किसी को भी यह नहीं पता कि 'रंगभूमि' व 'सवा सेर गेहूँ' में प्रेमचंद किसके अधिकार का बात करते हैं। लमही में घीसू, माधव, गोबर, धनिया के प्रतिरूप आज भी मौजूद हैं, पर इस चुनाव में उनकी कोई भूमिका नहीं है, चारों तरफ 'नमक का दरोगा' बनने की होड़ है।

निवर्तमान प्रधान श्रीमती पार्वती देवी पिछले एक दशक से इस गाँव की प्रधान हैं। कहती हैं, ''मुंशी प्रेमचंद के सपने को वही साकार कर सकती हैं। विकास चाहिए तो लोगों को उन्हें वोट देना होगा। उनके अलावा जितने प्रत्याशी मैदान में हैं उनमें कोई गम्भीर नहीं है।'' संतोष के बाबा बीस साल तक लमही के प्रधान रह चुके हैं। बताते हैं कि मुंशी प्रेमचंद के जन्मदिन और पुण्यतिथि पर होने वाले हर कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। गाँव में बच्चों को खेलने तक के लिए जगह नहीं है। श्री पटेल कहते हैं कि उनका गाँव मुंशीजी की वजह से देश-दुनिया में जाना जाता है। महान साहित्यकार के गाँव में बुनियादी सुविधाएँ नहीं हैं। बंजर भूमि खत्म हो गई है। प्रधान चुने गए तो सबसे पहले खेल का मैदान बनवायेंगे।

लमही ग्राम पंचायत चुनाव में भाग्य आजमाने वाले सभी प्रत्याशी यह दावा करने में कतई नहीं हिचकते कि वह मुंशी प्रेमचंद के सपना साकार करना चाहते हैं। मुंशीजी के सपने क्या थे? इसका जवाब किसी के पास नहीं है।

प्रेमचंद की 125वीं वर्षगाँठ पर प्रेमचंद स्मारक की स्थापना

उपन्यास सम्राट (बंगला उपन्यासकर शतरचन्द्र द्वारा घोषित) कलम सिपाही मुंशी प्रेमचंद की जन्मभूमि, रचनाभूमि लमही (वाराणसी) में उनके निधन के 69 वर्ष बाद 125वीं जयन्ती के अवसर पर रविवार 31 जुलाई 2005 को सूचना, प्रसारण एवं संस्कृति मंत्री (भारत सरकार) द्वारा प्रेमचंद स्मारक तथा अध्ययन केन्द्र एवं शोध संस्थान का शिलान्यास उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव के मुख्य आतिथ्य एवं श्रीमती सरला माहेश्वरी सांसद (राज्यसभा) के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

केन्द्रीय मंत्री तथा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने कालजयी साहित्यकार के लमही ग्राम को राष्ट्रीय साहित्यिक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की घोषणा की। केन्द्र सरकार लमही में राष्ट्रीय स्तर का मुंशी प्रेमचंद अध्ययन केन्द्र व शोध संस्थान बनाएगी। राज्य सरकार इस हेतु ढाई एकड़ भूमि प्रेमचंद के जन्मस्थल के सामने प्रदान करेगी। प्रेमचंदजी के जीर्ण शीर्ण पैतृक आवास के निर्माण के लिए एकमुश्त 25 लाख रुपये देगी। इसके अतिरिक्त प्रेमचंद के नाम पर प्रस्तावित पार्कों, पोखर, मार्गों, ग्रामद्वार स्मृति, स्तम्भों और उद्यान के लिए 2 करोड़ 5 लाख रुपये देने की घोषणा मुख्यमंत्री ने की।

इस अवसर पर प्रेमचंद के लमही ग्राम में दिल्ली से वायुमार्ग से पधारे साहित्यकार नामवर सिंह तथा राजेन्द्र यादव, स्थानीय साहित्यकारों में चंद्रबली सिंह, शिवकुमार मिश्र, काशीनाथ सिंह उपस्थित थे तथा अन्य स्थानीय साहित्यकार उपेक्षित दृष्टिगत हो रहे थे।

मुख्यमंत्री मुलायम सिंह इस अवसर पर उपस्थित प्रेमचंद के भाई महताब राय के पुत्र कृष्णकुमार राय तथा पौत्र आलोक राय (पुत्र अमृत राय), अतुल राय (पुत्र श्रीपत राय), पौत्री सारा राय से मिले और प्रेमचंद के जीर्ण-शीर्ण भवन को देखकर मर्माहत हुए।

125वीं वर्षगाँठ के समारोह 2 जुलाई 2006 को समाप्त हो जायेंगे, केन्द्रीय समिति भंग कर दी जायगी। उसके बाद क्या होगा, प्रेमचंद के जीवन की यही विडम्बना है। जीवनभर वे महाजनी सभ्यता से लड़ते रहे और अब तथाकथित राजनीतिज्ञों से जिनके लिए प्रेमचंद और प्रेमचंद का साहित्य उनके लिए धर्म-निरपेक्ष, गरीब परिवार और साहित्य संरक्षक दिखाने का माध्यम है।

मुंशी प्रेमचंद के नाम घोषित योजनाएँ

- मुंशी प्रेमचंद के पैतृक निवास का जीर्णोद्धार व निकट स्थित सरोवर का सौन्दर्यीकरण एवं विकास। पैत्रिक निवास को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करने में राज्य सरकार सहयोग भी करेगी।
- गोरखपुर में मुंशी प्रेमचंद ने जहाँ जीवनकाल के 20 वर्ष अध्ययन व अध्यापन में व्यतीत किये, वहाँ दिल्ली के एसपी मार्ग स्थित 'डांडी मार्च' की तर्ज पर कथा-सम्राट की कहानियों पर आधारित टैबल्यूक्स निर्माण।
- रामकटोरा पार्क मुंशी प्रेमचंद के नाम पर सुन्दरीकरण।
- सिंधोरा रोड से ऐढ़े-आदमपुर होकर लमही लिंक रोड (500 मीटर) का जीर्णोद्धार कार्य।
- आजमगढ़-वाराणसी मार्ग पर लमही लिंक रोड पर मुंशी प्रेमचंद स्मृति द्वार व छह मान स्तम्भों का निर्माण।
- बच्चों के लिए मुंशी प्रेमचंद की लघु कहानियों का सचित्र प्रकाशन व सूक्तियों को पुस्तक के रूप में प्रकाशन।
- पाण्डेयपुर स्थित मुंशी प्रेमचंद की मूर्ति पर छतरी का निर्माण।
- मुंशी प्रेमचंद शोध एवं अध्ययन संस्थान के लिए पैतृक आवास के निकट ढाई एकड़ भूमि का अधिग्रहण।
- कथा-सम्राट की कहानियों पर वर्षपर्यन्त नाट्योत्सव (30 जुलाई 06 तक)।

- मुंशी प्रेमचंद की कथाओं, पात्रों पर आधारित वेशभूषा प्रतियोगिता।
- पिशाचमोचन पार्क का नामकरण मुंशी प्रेमचंद के नाम पर व उसका सुन्दरीकरण।
- मुंशी प्रेमचंद की कहानियों का नाट्य रूपान्तरण का स्कूलों में वितरण और अंतर्विद्यालय नाट्य प्रतियोगिताओं का आयोजन।

लमही

सूखे पत्तों के बीच हवा की ताजी महक के साथ
ताजी ताजी बनी बासी रोटियों को खाते
जब दिखे अचानक काशीनाथ सिंह
आश्वस्त हुआ था लमही में अभी भी बहुत कुछ बचा है

तमाम, शोर व सन्नाटे के बीच
वायदों, प्रतिवादों, झूठी चिन्ताओं के खण्डहर से
जब चिग्घाड़ रहे थे वक्तागण
लमही में प्रेमचंद के स्मारक के बारे में
अकाल में लौट आई दूबों की तरह
जब दिखे थे मित्र वाचस्पति
'भारतीय लेखक' की प्रतियों को बाँटते
चुपचाप
आश्वस्त हुआ था कि लमही में अभी भी बहुत कुछ दिया जा सकता है।

देवीदीन चिल्ला चिल्लाकर चिल्ला रहा था
कुछ नहीं हुआ लमही में
लमही का कुछ नहीं हुआ
तभी मित्र पराग व पंकज के साथ
जब रामलीला मैदान से सटे पोखरे में दिखी थी लाठी
आश्वस्त हुआ था कि लमही में अभी भी बहुत कुछ बचाया जा सकता है।

—श्रीप्रकाश शुक्ल

देश की जनता के प्रतीक हैं प्रेमचंद के पात्र

मौजूदा दौर में हमें ऐसी राजनीति विकसित करनी होगी, जो कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद के 'होरी' और 'धनिया' के आँसू पोंछ सके और 'गोबर' को रोजगार दिला सके। प्रेमचंद के ये तीनों पात्र, उनके उपन्यास 'गोदान' के पात्र ही नहीं, बल्कि देश की जनता के प्रतीक भी हैं।

—अर्जुन सिंह
केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री

पृष्ठ 1 शेष भाग

इसी बीच मैंने सिंदबाद के ह्वेनसांग और फाहियान को पढ़ा। यह नहीं कि हिन्दी साहित्य या भारतीय साहित्य मैं नहीं पढ़ता था। मैंने रवीन्द्रनाथ टैगोर, निराला, सुब्रमण्यम भारती, प्रेमचंद... सबको पढ़ा। मैं मानता था कि ये लेखक तो अपने हैं ही, मगर दूसरे क्षेत्रों, दूसरे विषयों में भी मेरी दिलचस्पी हमेशा बरकरार रही।**—कमलेश्वर**

कथन

उच्च शिक्षा में रोबोट न बनायें

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विश्व व्यापार संगठन के अन्तर्गत चुनौतियाँ और अवसर विषय पर मैसूर विश्वविद्यालय में दक्षिण क्षेत्र के विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के सम्मेलन में भारतीय विश्वविद्यालय संघ के अध्यक्ष **डॉ० वाचस्पति उपाध्याय** ने चिन्ता व्यक्त की कि यह संगठन उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अवसर उपलब्ध कराने के बजाय चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रहा है। उच्च शिक्षा को उद्योग की आवश्यकता पर आधारित नहीं होना चाहिए अन्यथा इस शिक्षा से रोबोट जैसे यांत्रिक जन्म लेंगे। इससे बौद्धिक स्वतंत्रता का क्षरण होगा और शिक्षा का स्तर गिरता जायगा।

इस अवसर पर कर्नाटक के राज्यपाल **श्री टी०एन० चतुर्वेदी** ने कहा कि विश्वविद्यालयों को विश्वजनित होना चाहिए। बदलते समय में शिक्षा का उद्देश्य गुणवत्ता और प्रासंगिकता होना चाहिए। उच्च शिक्षा में शैक्षिक स्वतंत्रता अवश्य होनी चाहिए। विश्व व्यापार संगठन को इसके लिए अधिकाधिक अवसर प्रदान करना होगा।

राष्ट्रीय स्वाभिमान की भाषा रही है संस्कृत

संस्कृत राष्ट्रीय स्वाभिमान की भाषा रही है और उसने न केवल अतीत के ज्ञानभण्डार को प्रदर्शित किया है, बल्कि वह भविष्य में भी संवाद और प्रगति की भाषा हो सकती है। संस्कृत न केवल एक प्राचीन भाषा है बल्कि वह जीवंत भाषा भी है। संस्कृत के प्रयोग से देश की भावी पीढ़ियों का भविष्य सुधर सकता है। संस्कृत विश्व की प्रसिद्ध भाषा और वह राष्ट्र का स्वाभिमान भी है।

—अर्जुन सिंह
मानव संसाधन विकास मंत्री

ऐसी पुस्तक का अध्ययन प्रतिदिन अवश्य करें जो आपकी **आत्मिक, शा**रीरिक, सामाजिक अथवा आर्थिक उन्नति में सहायक हो।

— जैन धर्म की पुस्तक से

अनूठा शाप

विख्यात साहित्य मनीषी आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की विद्वता से महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय बहुत प्रभावित थे। दोनों एक-दूसरे का हृदय से सम्मान करते थे। द्विवेदीजी उन दिनों काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के उप कुलपति थे। छात्रों के साथ-साथ शिक्षक भी उनका बहुत आदर करते थे। एक बार छात्रों ने अपनी कुछ माँगों को लेकर उन्हें एक ज्ञापन दिया। द्विवेदीजी ने ज्ञापन की कुछ माँगें तो स्वीकार कर लीं, लेकिन कुछ उन्हें उचित नहीं लगीं, सो उन्हें नहीं माना। छात्रों ने पुन: अपनी माँगों को लेकर आन्दोलन शुरू कर दिया।

एक दिन कुछ छात्र द्विवेदीजी के निवास पर पहुँचे। लेकिन आचार्य के साथ बातचीत में अपनी माँगें पूरी न होते देख छात्रों ने उनका घेराव किया।

आचार्य द्विवेदी ने उनका उग्र रूप देखा, तो बोले, ''तुम लोग मेरी बात समझने को बिलकुल तैयार नहीं हो। मेरी अवमानना पर उतारू हो। मैं तुम सबको शाप देता हूँ कि परमात्मा तुम्हें एक दिन मेरी तरह किसी न किसी विश्वविद्यालय का उप कुलपति बनाए, जिससे तुम सभी इसी स्थिति से गुजरो।'' आचार्य के वाक्य सुनते ही घेराव कर रहे सभी छात्र ठठाकर हँस पड़े। देखते-देखते तनाव का वातावरण खत्म हो गया। फिर क्या था, छात्रों ने द्विवेदीजी से क्षमा माँगी और लौट गए।

—शिवकुमार गोयल

भारतीय विश्वविद्यालयों

के

बी.एड., बी.पी.एड., बी. फार्मा, बी.ए., बी.काम., बी.एस-सी., एम.ए., एम.काम., एम.एस-सी., एम.सी.ए., एम.बी.ए., गृह विज्ञान पाठ्यक्रमानुसार

संदर्भग्रंथ, सामयिक तथा साहित्यिक विषयों पर नवीनतम पुस्तकें

अंग्रेजी, हिन्दी तथा संस्कृत में

विश्वविद्यालय प्रकाशन

(तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम)

चौक, वाराणसी

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082 ● E-mail: sales@vvpbooks.com

यत्र-तत्र-सर्वत्र

सशक्त कवि विश्वरंजन का एकल काव्यपाठ

''समकालीन हिन्दी कविता के सशक्त हस्ताक्षर, कवि विश्वरंजन की कविताएँ विचार एवं संवेदना के सम्यक् निर्वाह की वजह से अपना विशेष प्रभाव छोड़ती हैं। कविता की नई जमीन तोड़ते तथा काव्य भाषा को उर्जस्वित बनाते कवि विश्वरंजन हिन्दी के विलक्षण तथा विशिष्ट कवि हैं जिनकी कविताओं से गुजरना कविता की परख, पहचान और पहुँच से वाकिफ होना है...''—उक्त प्रतिक्रिया प्रख्यात कथाकार मिथिलेश्वर ने इस अवसर पर व्यक्त की।

साहित्यिक पत्रिका 'मित्र' के संयोजकत्व में कवि विश्वरंजन का एकल काव्यपाठ हरप्रसाददास जैन महाविद्यालय आरा के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता शहर के वरिष्ठ साहित्यकार प्रो० परशुराम सिंह, उर्मिला कौल, डॉ० जटाशंकर ठाकुर, डॉ० के०डी० तिवारी, डॉ० गदाधर सिंह एवं मित्र के सम्पादक मिथिलेश्वर ने संयुक्त रूप से की। काव्यपाठ के दौरान विश्वरंजन ने बीस कविताओं का सस्वर पाठ किया।

डॉ० रामकुमार वर्मा का जन्मशती-समारोह

हिन्दी के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि एवं नाटककार डॉ० रामकुमार वर्मा को उनकी जन्मशताब्दी (1905-2005) के अवसर पर चेन्नई के साहित्यकारों ने श्रद्धापूर्वक याद किया। नगर की प्रसिद्ध संस्था 'साहित्यानुशीलन समिति' ने रविवार, 24 जुलाई 2005 को राजेन्द्रबाबू भवन के सभागार में एक विशेष समारोह आयोजित किया। समिति के अध्यक्ष डॉ० इंदरराज बैद ने सहृदय हिन्दीप्रेमियों का स्वागत किया। प्रसिद्ध लेखक एवं समीक्षक डॉ० एन० सुन्दरम के सभापतित्व में संचालित इस संगोष्ठी में चार विद्वत्तापूर्ण अनुशीलन-पत्र प्रस्तुत किए गए। डॉ० इंदरराज बैद ने अपने आलेख में डॉ० रामकुमार वर्मा की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए उन्हें एक राष्ट्रवादी एवं मानवतावादी कवि के रूप में स्थापित किया। वर्माजी के नाटकों का विश्लेषण करते हुए डॉ० एम० शेषन ने उनकी कृतियों में पाश्चात्य एवं भारतीय शैलियों के समन्वय की चर्चा की। डॉ० पी०सी० कोकिला ने वर्माजी के मनोवैज्ञानिक एकांकियों को आधार बनाकर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री पी०आर० वासुदेवन ने डॉ० रामकुमार वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक विहंगावलोकन प्रस्तुत किया। डॉ० एन० सुन्दरम, श्री शोभाकांतदास और श्रीमती सी०बी० प्रसाद ने सुखद स्मृतियों के श्रद्धापूर्ण सुमन अर्पित किये। डॉ० सैयद रहमतुल्ला, डॉ० विष्णुप्रिया, श्री प्रकाशमल भण्डारी, श्री रमेश गुप्त नीरद, श्री परशुराम शर्मा, डॉ० विद्या शर्मा, श्री विजयनाथ यादव, श्री विवेककुमार राय आदि नगर के प्रतिष्ठित साहित्य-सेवी समारोह में समुपस्थित रहे।

नेमिचंद्र जैन की रचना व व्यक्तित्व के कई आयाम थे : मुकुन्द लाठ

नेमिचंद्र जैन ने विचार की गहराई व व्याख्यान के साथ नाट्यकर्म को जिया। उनकी रचना कर्म व व्यक्तित्व के कई आयाम थे। उन्हें नाट्य से विशेष लगाव था। श्री जैन नाट्य को स्वतंत्र और अवयवी मानते थे। नाट्य विभिन्न कलाओं को मिलाकर बनाया गया एक संगाम होता है। एक ही संस्कृति में भिन्न कलाएँ साथ होती हैं। कलाओं में आत्मसात करने की विशेषता होती है।

नटरंग प्रतिष्ठान और नेमि निधि के तत्वावधान में 'हमारी आधुनिकता' विषय पर पहला नेमिचंद्र जैन स्मारक व्याख्यान देते हुए सुपरिचित चिन्तक, कवि डॉ० मुकुन्द लाठ ने कहा कि ''आधुनिकता यदि सपाट सा शब्द होता तो कोई दिक्कत नहीं होती।''

आधुनिकता का अर्थ है—नया और सार्थक अर्थात् जिससे उन्मेष हो। परम्परा का अर्थ बिना प्रतिभा के नहीं होता। पश्चिम में परम्परा का अर्थ पीछे का छोड़ नये को स्वीकार करना है। परम्परा का अर्थ यदि रूढ़ि ही होता तो यूरोप में ग्रीस की मिट चुकी परम्परा को नए का उदय नहीं होता। परम्परा मृत नहीं होती बल्कि वह सदैव जागृत रहती है। हम हमारेपन की चर्चा करते हैं तो यह मानकर चलते हैं कि हमारी संस्कृति जैसी कोई एक भारतीय संस्कृति है जो भिन्न कलाओं से अभिव्यक्त होती रही है। भिन्न कलाओं में हम हमारापन देखते ही नहीं हैं बल्कि उसका एक प्रत्यक्ष बोध करते हैं। भिन्न कलाएँ अपना स्वातंत्र्य साधती हुई साथ होती हैं। इस एकता के कारण हम हमारी संस्कृति में अपनेपन की बात करते हैं। भाषा में धारणाओं की एक बुनावट होती है। हमारेपन की हमारी आधुनिकता हमारे साहित्य में गहरी है क्योंकि हमारा साहित्य हमारी भाषाओं में है।

कार्यक्रम की शुरुआत में मशहूर रंगकर्मी, मलयालम के वरिष्ठ कवि एवं संगीत नाट्य अकादमी के उपाध्यक्ष कावलम नारायण पणिक्कर ने 'नटरंग' के नेमिजी पर एकाग्र विशेषांक और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा प्रकाशित नेमिजी की पुस्तक 'इण्डियन थियेटर' का लोकार्पण किया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ कवि-आलोचक अशोक वाजपेयी ने किया। अन्त में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की ओर से नेमिजी की चुनी हुई कविताओं की संगीतमय नाट्य प्रस्तुति की गई। **—साधना अग्रवाल**

हिन्दी प्रदेश में हिन्दी

उत्तर प्रदेश हिन्दी भाषा और साहित्य का केन्द्र रहा है। कबीर, सूर, तुलसी, प्रसाद, प्रेमचंद, निराला, पंत, महादेवी आदि कितने साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं से हिन्दी को समृद्ध किया।

किन्तु आज स्थिति यह है कि उत्तर प्रदेश में दसवीं कक्षा की बोर्ड की भाषा की परीक्षा में 35 प्रतिशत छात्र अनुत्तीर्ण हो गये। मातृभाषा की यह उपेक्षा सर्वथा चिन्तनीय है। क्या हिन्दी इतिहास बनकर रह गई है। शिक्षक भी भाषा के प्रति गम्भीर नहीं हैं। मानव संसाधन मंत्रालय भी हिन्दी भाषा के व्याकरण और हिन्दी साहित्य के इतिहास को एन०सी०आर०टी० की पुस्तकों से हटाने पर विचार कर रहा है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थी हिन्दी भाषा के नाम पर हिंगलिश और लोकभाषायुक्त हिन्दी भाषा सीखेंगे। साहित्य उनकी भाषा का विषय नहीं होगा। खेद है आज के राजनीतिक परिवेश में यह देश बौद्धिक और सांस्कृतिक शून्यता की ओर अग्रसर हो रहा है।

उच्च शिक्षा में हिन्दी प्रोत्साहन विशेषज्ञ समिति का गठन

केन्द्रीय हिन्दी सलाहकार समिति द्वारा स्वीकृत

मानव संसाधन विकास मंत्रालय से सम्बन्धित द्वितीय उप समिति की सिफारिशों के आकलन के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने 'उच्च शिक्षा में हिन्दी प्रोत्साहन विशेषज्ञ समिति' का गठन किया है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने डॉ० अर्जुन तिवारी, पूर्व-निदेशक काशी पत्रकारिता पीठ, वाराणसी को इस समिति का अध्यक्ष मनोनीत किया है।

समिति के विचारणीय विषय होंगे—(1) हिन्दी माध्यम से उच्च शिक्षा का प्रावधान विशेष रूप से चिकित्सा, इंजीनियरिंग, विज्ञान इत्यादि में। (2) विदेशी छात्रों को हिन्दी की उच्च शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता, (3) हिन्दी में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार, (4) हिन्दी में उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए आयोग द्वारा हिन्दीभाषियों के लिए हिन्दी प्रोत्साहन योजना।

पाकिस्तान का राष्ट्रगान

ऐ सरजमीन-ऐ-पाक ज़र्रे
तेरे हैं आज सितारों से तबतक
रोशन यह कहकशाँ से
कहीं आज तेरी खाक

पाकिस्तान के राष्ट्रीय गान के रचयिता जगन्नाथ आजाद का पिछले दिनों निधन हो गया। जगन्नाथ आजाद लाहौर की साहित्यिक पत्रिका में काम करते थे। उनके परिवारजन देश विभाजन के आतंक से लाहौर से जा चुके थे। जगन्नाथ के मुस्लिम मित्रों ने उनकी सुरक्षा का दायित्व लिया।

लाहौर रेडियो में काम करने वाले एक मित्र ने 9 अगस्त 1947 को प्रात: जगन्नाथ आजाद को पाकिस्तान के प्रथम गवर्नर जनरल मोहम्मद अली जिन्ना का सन्देश दिया—कायदे आजम की इच्छा है कि आप पाकिस्तान का राष्ट्रीय गान लिखें।

14 अगस्त को पाकिस्तान का स्थापना दिवस था। 5 दिन के अन्दर वह भी पाकिस्तान का राष्ट्रीय गान लिखना जगन्नाथ आजाद के लिए कितना भारी था। फिर भी उन्होंने लिखा।

आखिर क्यों लिखा? जगन्नाथ आजाद ने कहा—जिन्ना साहब ने पाकिस्तान के जन्म के समय अपनी तकरीर में कहा था—''आप देखेंगे गुजरते वक्त में हिन्दू हिन्दू नहीं रह जायँगे और मुसलमान मुसलमान नहीं रहेंगे। धार्मिक अर्थों में नहीं, धर्म व्यक्तिगत आस्था है, राजनीतिक अर्थों में इस देश के नागरिक होंगे।''

कायदे आज़म की मंशा थी कि पाकिस्तान का राष्ट्रीय गान उर्दू भाषा के जानकार हिन्दू से लिखवाया जाय। यह राष्ट्रीय गान पाकिस्तान की तत्कालीन राजधानी कराची रेडियो से सुनाया गया। जिन्ना के अहम् ने पाकिस्तान जरूर बनवाया। लेकिन वे पाकिस्तान को धर्म निरपेक्ष बनाना चाहते थे पर ऐसा हो न सका। हालात इतने बिगड़े कि जगन्नाथ आजाद के मित्रों ने कहा कि वे अब उनकी हिफाजत नहीं कर सकते और सितम्बर 1947 में उन्हें भागकर हिन्दुस्तान आना पड़ा।

जिन्ना की मृत्यु के बाद उर्दू शायर हाफिज जलंधरी द्वारा लिखा गया राष्ट्रीय गान स्वीकार किया गया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के घटक पुस्तकालय

दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली में अपने लगभग 35 संघटक कालेजों के लिए किराये के भवनों में पुस्तकालयों का संचालन करता है। छात्र जिनके लिए दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में पुस्तकालय स्थापित किये गये उनमें उनकी रुचि नहीं अत: ऐसे पुस्तकालय जिनकी उपयोगिता नहीं रह गई, उन्हें बन्द कर देने की स्थिति आ गई है। ऐसी स्थिति में उनमें उपलब्ध पुस्तकें छात्रों को एक रुपये से तीन रुपये में दी जा रही है जिनमें प्रेमचंद से लेकर दिनकर की पुस्तकें भी हैं। कितनी पुस्तकें जो पुस्तकालयों को दान में प्राप्त हुईं; जिनकी उपयोगिता नहीं है खादी ग्राम उद्योग को रद्दी में कागज बनाने के लिए बेच दी गईं। इसी से ज्ञात होता है कि इस देश में पुस्तकों का भविष्य क्या है?

दुर्लभ ग्रन्थों को समेटे हिन्दी साहित्य समिति की कुर्की

हजारों की संख्या में पुस्तकों दुर्लभ पत्र-पत्रिकाओं और हस्तलिखित ग्रन्थों को समेटे राजस्थान में भरतपुर की प्रमुख साहित्यिक संस्था श्री हिन्दी समिति को अपनी 93वीं वर्षगाँठ पर अपने मुख्य भवन की कुर्की के आदेश की जलालत झेलनी पड़ रही है। समिति पुस्तकालय के करीब आधा दर्जन कर्मचारियों के बकाया वेतन भत्तों आदि के मद में ब्याज सहित 26 लाख रुपये की अदायगी के मामले में सिविल न्यायाधीश कनिष्ठ खण्ड श्रीमती शिवानी जौहरी के आदेश पर यहाँ लक्ष्मण मन्दिर स्थिति समिति के भवन की कुर्की सम्बन्धी आदेश चस्पा किये गये। वर्ष 1912 में 13 अगस्त को मात्र पाँच पुस्तकों से आरम्भ इस पुस्तकालय में वर्तमान में 27 हजार से अधिक पुस्तकें, लगभग 15 हजार दुर्लभ पत्र-पत्रिकाओं की जिल्दें और 1600 से ज्यादा हस्तलिखित ग्रन्थ संगृहीत हैं। इसी समिति के तत्वावधान में वर्ष 1927 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग का अधिवेशन भरतपुर में हुआ था, जिसमें विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर, महामना मदनमोहन मालवीय, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन सहित अनेक हस्तियाँ मौजूद थीं। राज्य सरकार, प्रबुद्धजन तथा जन प्रतिनिधि इस मामले को लेकर मौन हैं।

पुस्तकों का मूल्य रत्नों से अधिक है, क्योंकि रत्न बाहरी चमक-दमक दिखाते हैं, जबकि पुस्तकें अंत:करण को उज्ज्वल करती हैं। — **महात्मा गाँधी**

अध्ययन हमें आनन्द प्रदान करता है, अलंकृत **करता है और योग्**यता प्रदान करता है।

— फ्रांसिस बेकन

लोकार्पण

'काला गुलाब' का लोकार्पण

बिहार सरकार के पूर्व गृह सचिव एवं साहित्यकार श्री जियालाल आर्य ने सुप्रतिष्ठ कवि-समालोचक डॉ० शिवनारायण के चर्चित काव्य-संग्रह 'काला गुलाब' का लोकार्पण करते हुए कहा कि ग्राम से विश्वग्राम तक फैली जीवन-संघर्ष की नाना स्थितियों को अपने में समेटती शिवनारायण की कविताएँ अपने समय की असंगतियों के साथ-साथ उत्तर आधुनिक संस्कृति की विद्रूपताओं का आख्यान प्रस्तुत करती हैं। डॉ० शिवनारायण कुशल सम्पादक, सूक्ष्मदर्शी समालोचक होने के साथ ही अत्यन्त संवेदनशील एवं विचारप्रज्ञ कवि हैं।

'स्वर्णमंजूषा में कैद सत्य' का लोकार्पण

भारत सरकार की सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्रीमती मीरा कुमार ने पटना संग्रहालय सभागार में युवा कवि अशोक कुमार सिन्हा के सद्य: प्रकाशित काव्य-संग्रह 'स्वर्णमंजूषा में कैद सत्य' का लोकार्पण करते हुए कहा कि काव्य का जन्म सदैव ही पीड़ा और करुणा से होता रहा है, इसलिए समाज और राष्ट्र की पीड़ा भी कविताओं में झलकती है। उन्होंने 'स्वर्णमंजूषा में कैद सत्य' की कविताओं की प्रशंसा करते हुए कहा कि इसके कवि ने देश-समाज की समकालीन चेतना को संवेदनात्मक अभिव्यक्ति दी है।

कला-दर्पण

वासुदेव बलवन्तराय स्मार्त

अनुवादक

ना०वि० सप्रे

संस्करण : 2005

ISBN : 81-7124-383-5

विश्वविद्यालय प्रकाशन

वाराणसी

मूल्य : 200.00

'कला-दर्पण' भारतीय तथा पाश्चात्य चित्रकला का दर्पण है। चित्रकला की समस्त क्रिया-प्रक्रिया का चित्रात्मक अध्ययन है। पुस्तक तीन भागों में विभाजित है।

प्रथम भाग में कला का रसग्रहण के अन्तर्गत कला और ललितकला के अन्तर को व्यक्त करते हुए चित्र-कला के प्रमुख अंगों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

'द्वितीय भाग' में पश्चिमी कला के इतिहास के साथ चीनी कला का इतिहास भी दिया गया है।

'तृतीय भाग' में भारतीय शिल्प एवं स्थापत्य के साथ भारतीय चित्रकला के विकास का सर्वेक्षण है।

पुस्तक में सुप्रसिद्ध भारतीय एवं पाश्चात्य चित्रकारों की कलाकृतियों के हाफटोन चित्र हैं। चित्रकला के अध्येताओं के लिए यह महत्त्वपूर्ण कृति है।

आपका पत्र

'भारतीय वाङ्मय' का प्रत्येक अंक मिलता रहा है। अच्छे प्रकाशक के साथ-साथ आप एक अच्छे सम्पादक और पत्रकार की भूमिका का सफल निर्वाह भी कर रहे हैं। भले ही यह पत्रिका कृत्रिमता से दूर है परन्तु इसमें स्तरीय और संग्रहणीय सामग्री से पाठक के सुख की अनुभूति होती है। बिहारी के दोहों की तरह यह गागर में सागर का काम करता है। मेरी बधाई स्वीकारें।

—डॉ० इन्द्र सेंगर, दिल्ली

'भारतीय वाङ्मय' का जून-जुलाई अंक मिला, मैं उसे पढ़ गया हूँ। यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कुछ लोग बिना तथ्यों की जानकारी के ही बड़ी-बड़ी बातें लिख जाते हैं। श्री मंगलमूर्ति ने 'प्रेमचंद की सवा सौवीं जयन्ती' शीर्षक टिप्पणी में लिखा है कि हिन्दी में प्रेमचंद विषयक कोई प्रामाणिक सन्दर्भ-ग्रन्थ 'अपनी पूर्णता में' प्रस्तुत नहीं हो सका है। यह लिखते समय उन्हें ध्यान नहीं रहा कि डॉ० कमलकिशोर गोयनका का 'प्रेमचंद विश्वकोश' प्रेमचंद विषयक एक उल्लेखनीय सन्दर्भ-ग्रन्थ है। वह कितना 'प्रामाणिक' और 'पूर्ण' है, यह तो परीक्षणीय है। पर बिना उसकी परीक्षा किये ही उसे नकार देना या तो अज्ञान का परिचायक है, या अविवेक का। मैंने 'प्रेमचंद विश्वकोश' का गहन उपयोग किया है और उसके आधार पर यह कह सकता हूँ कि कुछ त्रुटियों के बावजूद वह एक विश्वसनीय और काफी हद तक पूर्ण सन्दर्भ-ग्रन्थ है। जहाँ तक लमही में प्रेमचंद के स्मारक-निर्माण का प्रश्न है, भारत सरकार का संस्कृति विभाग इसे अंजाम देने जा रहा है। इसके लिए अखिल भारतीय स्तर पर एक प्रेमचंद राष्ट्रीय स्मारक समिति बन चुकी है और इसका उद्घाटन भी 31 जुलाई, 2005 को लमही में होनेवाला है। जहाँ तक वेबसाइट खोलने की बात है, वह चाहे साहित्य अकादमी खोले या प्रेमचंद-स्मारक संस्थान, जरूरी यह है कि उसमें प्रेमचंद के सम्पूर्ण साहित्य का प्रामाणिक पाठ, जो प्रेमचंद की रचनाओं के प्रथम संस्करण और अमृत राय तथा कमलकिशोर गोयनका द्वारा उपलब्ध करायी गयी नयी सामग्री के रूप में उपलब्ध है, उपलब्ध कराया जाए। मंगलमूर्ति के अन्य सुझावों के बारे में कोई मतभेद नहीं हो सकता। प्रेमचंद स्मारक समिति को इन सुझावों पर ध्यान देना चाहिए, तभी उसकी सार्थकता है। **—प्रो० गोपाल राय,** नयी दिल्ली

'भारतीय वाङ्मय' के जून-जुलाई 2005 अंक के सम्पादकीय 'इतिहास की निर्ममता' में आपने बहुत सच्ची बात ''जब-जब सत्ता बदली इतिहास भी बदलता रहा'' लिखकर इतिहास की वास्तविक स्वरूप सामने लाने की दिशा में एक सार्थक पहल की है। भारतीय इतिहास के बारे में सच्चाई यही है कि अंग्रेजों ने अपने उद्देश्य की पूर्ति को ध्यान में रखकर इतिहास लिखा तो कुछ विदेशियों (अंग्रेज लेखकों से इतर) ने अपने और अपनी सभ्यता संस्कृति की श्रेष्ठता प्रमाणित करने के लिए भारतीय इतिहास को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया। कुछ धार्मिकों और कट्टरवादी लेखकों ने उसे अपने ढंग से विश्लेषित, व्याख्यायित किया। सच्चा इतिहास तभी सामने आयेगा जब लेखक तटस्थ और निष्पक्ष हो। 'किताबें कुछ जानना चाहती हैं' में जितेन्द्र भाटिया ने जिन प्रश्नों को उठाया है वे सार्थक बहस की अपेक्षा रखते हैं। हिन्दी पाठकों में किताबें खरीदने से लेकर पढ़ने तक की प्रक्रिया में लालसा और उत्सुकता का अभाव चिन्ता का विषय है। बांग्ला और मलयालम भाषियों में किताबें खरीदने और पढ़ने की जो प्रवृत्ति मिलती है वह हिन्दी पाठकों में क्यों नहीं है, इस पर सभी को सोचना होगा। 'सारस्वत बोध के प्रतिमान आचार्य रामचन्द्र तिवारी' पुस्तक के लोकार्पण द्वारा सरस्वती के वरद पुत्र का सम्मान हुआ है। आप तथा डॉ० वेदप्रकाश पाण्डेय बधाई के पात्र हैं।

—डॉ० व्यासमणि त्रिपाठी,
पोर्टब्लेयर (अण्डमान)

'भारतीय वाङ्मय' का जून-जुलाई 05 का अंक मिला। अपने सम्पादकीय टिप्पणी 'इतिहास की निर्ममता' में आपने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाया है—ईमानदार नजरिये से भारत का इतिहास लिखे जाने की सख्त जरूरत है साथ ही इस देश के सभी दलों के नेताओं और हुल्लड़बाज कार्यकर्त्ताओं को भी सिर्फ नारे, धरना, प्रदर्शन, तोड़-फोड़ की राजनीति से हटकर कुछ पढ़ना-लिखना भी चाहिए। दुर्भाग्य तो यह है कि पढ़ने की संस्कृति विलुप्त हो रही इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जो सुनाये जो दिखाये बस काफी है। अक्षर की उपेक्षा से राक्षसीवृत्ति ही पनप रही है।

आपने सच को उजागर कर स्तुत्य कार्य किया है बधाई। **—डॉ० शरद नागर,** लखनऊ

सम्पादकीय का तो कोई जवाब नहीं। बड़बोलेपन का हलकापन इसमें नहीं है। इसमें सत्यासत्य विवेचना की वस्तुपरकता तथा सन्तुलित एवं तेजस्वी वाणी की गम्भीरता है।

किताबों के महत्त्व पर अच्छी सामग्री आप देते रहे हैं। कविता और अनमोल बोल (सुभाषित) तो प्राय: प्रत्येक अंक की शोभा हैं। इस अंक में भी सुश्री प्रेरणा सारवान की दो कविताएँ हैं। लेकिन डॉ० बच्चन सिंह का चिन्तन 'बोलती हैं तो चुप नहीं होतीं किताबें' मन को छू गया। यह चिन्तन अपने आप में पुस्तकों-पुस्तकालयों की दशा-दिशा का एक मार्मिक सर्वेक्षण है, वस्तुनिष्ठ आलोचना है और है दो टूक टिप्पणी में एक रम्य रचना का आस्वाद। **—अनिलकुमार आंजनेय**
उजियार (बलिया)

'भारतीय वाङ्मय' का अगस्त अंक प्राप्त हुआ, हिन्दी की उपेक्षा तथा अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव के प्रति आपका सारगर्भित लेख पढ़ने को मिला। साथ ही आपने इस अंक में कथाकार द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुणजी' व्यथा 'कलेजे में दुनिया का दर्द लिये जा रहा हूँ' लेख प्रकाशित करके बड़ा उपकार किया। इतने दिन बाद ही यह समझ में आया कि निर्गुणजी की कथाओं में आम आदमी की पीड़ा इतने जीवन्त रूप में कैसे अभिव्यक्त होती थी? समाज के निर्बल, असहाय तथा पीड़ित नारी पात्रों का सजीव चित्रण सम्भवत: प्रेमचंदजी के बाद उनकी ही लेखनी से सम्भव हुआ है। हृदय में इतनी पीड़ा सहने वाला कथाकार ही समाज को इतने अनमोल रत्न दे सकता है।

—जे०सी० पंत, हल्द्वानी (नैनीताल)

काशी में मोक्षकामी प्रवासी विधवाएँ

सत्यप्रकाश मित्तल
रामलखन मौर्य

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN : 81-7124-409-2
विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी

मूल्य : 200.00

?

भारतीय भाषाओं की किताबों का संसार छोटा होता जा रहा है। हिन्दी तो काफी पिछड़ती जा रही है। अच्छी साहित्यिक किताबों का हिन्दी में अकाल सा दिख रहा है। पूर्णकालिक लेखक बनने का किसी में भी साहस नहीं दिख रहा है। हिन्दी में एक लाख रुपये रायल्टी पाने वाले गिने-चुने ही लेखक हैं। वहीं हैरी पॉटर जैसी किताबें दुनिया में लाखों की संख्या में बिक रही हैं। हमारे यहाँ हैरी पॉटर जैसी मायावी, तिलस्मी और जादुई दुनिया की एक पूरी परम्परा है। सिंहासन बत्तीसी, भूतनाथ और चंद्रकांता इसी परम्परा की किताबें हैं। प्रकाशक न जाने किस लाचारगी के चलते इनका दोहन नहीं कर पा रहे हैं। प्रकाशन जगत के समक्ष क्या चुनौतियाँ हैं?

हमारे यहाँ तिलस्मी और जादुई दुनिया की परम्परा मौजूद है। ऐसे में एक हैरी पॉटर क्यों नहीं पैदा कर पा रहे हैं? —प्रदीप सौरभ

भारतीय भाषाओं के प्रकाशकों के पास साधनों की कमी है। हम हैरी पॉटर की तरह अपनी पुस्तकों को जारी नहीं कर सकते हैं। हमारे यहाँ अनुवाद की समस्या है। यदि हम चंद्रकांता का अंग्रेजी में अनुवाद करवाना चाहें तो उसकी शब्दावली और भाव के कारण उसका अनुवाद नामुमकिन है। वैसे भी भारत में प्रकाशन का इतिहास आजादी से कुछ साल पहले का है। विपरीत इसके अंग्रेजी प्रकाशन जगत का इतिहास तीन सौ साल पुराना है। हम उस स्तर पर अपने को लाने का प्रयास कर रहे हैं।

—अशोक माहेश्वरी, राजकमल प्रकाशन

चुप हो रही हैं किताबें

डॉ० शुकदेव सिंह

'चुप नहीं होतीं किताबें' जैसी ललित टिप्पणी के लिए आपको कई सौ बार बधाई देता हूँ। जिन्दगी का नवाँ दशक पूरा कर रहे सनातन युवक का यह छोटा लेख प्रणम्य है। इसलिए कि वे प्राय: चालीस-पचास वर्ष से अपने पुस्तक-प्रेम के लिए ही नहीं; पुस्तकप्रेमी उत्तराधिकारियों के लिए सम्मानित हैं। घर में चार-चार साहित्य के ही डॉक्टर हैं। ऊँचे पदों पर हैं। उनकी चिन्ता हमारे समय से संवाद करती है। स्वयं मेरी चिन्ता इधर कई महीनों से इसी विषय को लेकर है। देश-देशान्तर से छपी पुस्तकें, हस्तलेख, आदिमुद्रित ग्रन्थों का विरल संकलन, इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी से लेकर गाँवों में पड़े हुए हस्तलेखों के 'निगेटिव' हैं। 'प्रणाम कुटी' नाम से एक छोटा-सा पुस्तकालय कई वर्षों से व्यवस्थित कर रहा हूँ। अचानक यह सवाल उठा कि क्या किताबें आदमी से ज्यादा महत्त्वपूर्ण हैं? दोस्तों, मित्रों के आने पर उसी पुस्तकालय में बैठने का मन कुछ ऐसे चंचल हुआ कि एक असफल 'वसीयतनामा' में 'ना घर तेरा, यह घर मेरा, उड़ जा पंछी, खोज बसेरा' कहाँ उड़ूँ? कहाँ जाऊँ? तिहत्तरवें वर्ष में टूटती हुई देह। हैं तो जगहें। कबीर, रैदास, कीनाराम के आश्रम में रहने को जगहें तो हैं। बूढ़े तन की परवरिश के लिए छोटी सी पेंशन भी लेकिन किताबों का क्या करूँ? मुर्दा तो कहीं जा सकता है टिकठी कहाँ जाएगी? इसे अर्थी भी कहते हैं। हम 'सबद' हैं किताबें अर्थ—अर्थी।

मेरे पास अनमोल किताबें हैं। बची-खुची थोड़ी जिन्दगी, दादी का उपदेश ''अपना पहरा करब जाग आन क पहरा लागो आग।'' कई बड़े पुस्तकालयों से सम्बद्ध हूँ। उन्हें बचा सकता हूँ। लेकिन सवाल बचने का नहीं है। पुस्तकों के प्रति मरण-मंत्र लिखे जाने का है। इंटरनेट, सी०डी०, डी०वी०डी०, फ्लापी तमाम साधन हैं लेकिन ये पुस्तक, ग्रन्थ या पोथी की जगह नहीं ले सकते। इस देश में पुस्तकों की रक्षा के लिए संकल्पित, प्रतिबद्ध एक सबल समाज को 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' और 'चौरासी के दंगे' झेलने पड़े। बीसों पोथियाँ व्यक्ति के स्थान पर सबद को महत्त्व देती हैं। 'गुरुग्रंथ' 'बीजक', 'कुलज़य स्वरूप', 'गुरुन्यास', पाँजी, उनकी डी०वी०डी० नहीं बन सकतीं। किताब की ही आरती, उसी का मन्दिर, उसी के ग्रंथी, उसी का सबद कीर्तन। ऐसे 'पुस्तकजीवी' देश में जहाँ पुस्तक में छोटे से हेर-फेर पर भगवान गोसाईं, भग्गोदास हो जाता है। आपकी पत्रिका की छोटी टिप्पणी से झुरझुरी पैदा करने वाला एक भय सामने आ गया है।

डॉ० मोती सिंह का बड़ा पुस्तकालय उनके साथ ही घर से बाहर हुआ। डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय विलक्षण पुस्तक संग्रही थे। मोहनलाल तिवारी की पुस्तकों के बारे में अभी चिन्ता का सूर्योदय भी नहीं हुआ। कठिन अँधेरी रात घिर रही है। मेरे गुरु पण्डित विश्वनाथ प्रसाद मिश्र हस्तलेखों के अम्बार में यंत्रहीन समय में अक्षर बड़ा करने वाला शीशा लिए हुए अपने व्यास-पीठ पर 'अग्नि के सिंहासन' पर बैठने की घोषणा करते रहते थे।

> ह्वेनसांग, इत्सिंग या फाहियान कोई चीनी ज्ञान-भिक्खु अपने सैकड़ों शिष्यों के साथ पुस्तक-संग्रह के लिए भारत आया। एक बड़े जलपोत पर लाखों पुस्तकें लिये जा रहा था कि समुद्र में तूफान आ गया। बड़ा बोझ होने के कारण जहाज डूबने लगा। नाविकों ने कहा—पुस्तकें फेंको नहीं तो जहाज डूब जायेगा। संग्रही भिक्खुओं ने कहा आदमी तो पैदा होता रहेगा। पुस्तकें बार-बार नहीं बनेंगी। सभी समुद्र में कूद गये। इस तरह की विरल पुस्तकों का संग्रह चीन में बदलते समय के साथ 'स्तूप' बन गया। पुस्तकें सुरक्षित हैं। बदलते समय के साथ वे पुस्तकें ही चीन की प्राण-शक्ति हैं। मैंने 'नत्थि सोको फुतो भयं' नामक बुद्ध जयन्ती के अवसर पर बनी डाक्यूमेन्ट्री में इस स्तूप की परिक्रमा करते हुए बौद्धों का चित्रांकन कराया था। यह फिल्म तीन-चार बार दिखायी गयी।

किताबों के लिए ही काशी नरेश का प्रणाम प्राप्त करने के बहाने 'भरत मिलाप' के अवसर पर एक ऊँची जगह पर घण्टों खड़े रहते थे। उनकी पुस्तकें चली गयीं। ले जाने वाले संत भी चले गये। प्रकाशकों के संत-नायक कृष्णचन्द बेरी ने शुरू में सौ ऐसी पुस्तकें छापी थीं जो मेले ठेले में, गाँवों में बिकती थीं। उन किताबों के पढ़ने के लिए निरक्षर गाँवों की लड़कियाँ और लड़के 'रामागती देहू सुमती' का मंगल-पाठ करने के बाद क ख ग सीखते थे। अन्तिम दिनों इन्हीं किताबों के लिए मैं उनके पास गया। उन्होंने आदेश भी दिया। उनके सज्जन कुलीन पुत्र विजय बेरी ने भी उन किताबों के बारे में विस्तार से बताया। उनके विशाल पुस्तक-भण्डार में इक आना, दो आना की किताबों की कब खोज होगी? कैसे खोज होगी? वे अस्वस्थ भी हैं और वैरागी भी हो चुके हैं। चलते हुए सिक्के तो उनके यहाँ चलेंगे ही लेकिन अपनी करेन्सी खो चुकी ये आना, दोआना वाली किताबें गाँवों की निरक्षरता का साक्षर इतिहास लिए डूब जाएँगी। 'मास्टर खेलाड़ीलाल एण्ड सन्स' जैसे सैकड़ों प्रकाशकों की अमूल्य धरोहर, अँधेरे में लुप्त होती जा रही है। 'कारमाइकल लाइब्रेरी', 'अभिमन्यु पुस्तकालय', 'खोजवाँ लाइब्रेरी' में इकट्ठा की हुई धरोहर पुस्तकें अब धीरे-धीरे पड़ा हुआ कागज कुछ दिनों में सड़ा हुआ कागज हो जाएँगी। पत्रिकाओं और पुस्तकों के अद्भुत संकलनकर्ता विजयशंकर मल्ल, रामचन्द्र वर्मा, पुरुषोत्तमलाल श्रीवास्तव जैसे लोगों के संग्रहों के साथ वासुदेवशरण अग्रवाल, पण्डित हजारीप्रसाद द्विवेदी, आचार्य चन्द्रबली पाण्डेय, पं० बलदेव उपाध्याय, संकठाप्रसाद पाण्डेय जैसे सैकड़ों लोगों के संग्रह धूल माटी हो रहे हैं। आपके यहाँ भी तो बहुत बड़ा संग्रह है। आपके सनातन मित्र, खड्गविलास प्रेस से सम्बद्ध पारसनाथ सिंहजी की किताबें, उनके गाँव तारणपुर में उनकी नब्बे वर्ष की आयु में साथ-संग हैं। आगे क्या होगा?

आप सहित हम सब लोग दूसरी दुनिया की ओर मुँह किए हुए हैं। लेकिन क्या आपको नहीं लगता कि हमारे यहाँ घरों का दिया बुझ रहा है और हम मस्जिद में दिया जलाने की तैयारी कर रहे हैं।

आप ही कुछ कर सकते हैं। मैं श्रावण के सोमवार को आपके लिए सौ वर्ष की जीवन-शक्ति और जीवन माँगता हूँ।

शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार

डॉ० के०पी० पाण्डेय

प्रथम संस्करण : 2005

ISBN : 81-7124-425-4

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 250.00

उपन्यास-प्रेमी था डाकू अमृतलाल

मध्यप्रदेश अपने यहाँ के डाकुओं के लिए विख्यात या कुख्यात रहा है। मानसिंह की ही परम्परा में डाकू अमृतलाल का नाम आता है। सायंकाल का झुटपुट, देहाती स्कूल का अध्यापक अपना काम खतम कर पाँव पैदल समीप के अपने गाँव को जा रहा था। रास्ते में मिला अमृतलाल, कन्धों पर झूलती बन्दूकें और गले में कारतूसों की माला। अध्यापक तो भय के मारे काँपने लगा। अमृतलाल ने नाम और पता पूछा और 'अध्यापक' जानने पर उसे अभयदान भी दिया। मास्टरजी के झोले को टटोला तो टिफिन बॉक्स के साथ दिखाई दिया—फणीश्वरनाथ रेणु का 'मैला आँचल'। उपन्यासों के रसिया अमृतलाल ने मास्टरजी को आश्वस्त किया कि दो चार दिन बाद उसकी पुस्तक उसके घर पर पहुँचा दी जायगी। डाकू अपने वादे का पक्का निकला। 'मैला आँचल' उसने पढ़ डाला और मास्टरजी के घर पर उसे लौटाने आया तो न कन्धे पर बन्दूक थी और न गले में कारतूस। धन्यवाद देकर पुस्तक लौटा दी और धीमी पदचाप से लौट गया। मास्टरजी को अपने घरवालों को यह बताने का साहस नहीं हुआ कि 'मैला आँचल' लौटाने आया खूँखार डाकू था।

—डॉ० भवानीलाल भारतीय

2005 में प्रकाशित पुस्तकें

आलोचना

सामना : रामविलास शर्मा की विवेचना पद्धति और मार्क्सवाद तथा अन्य निबन्ध *वीरभारत तलवार* 350.00
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : प्रस्थान और परम्परा *राममूर्ति त्रिपाठी* 495.00
आधुनिक हिन्दी स्वच्छंदतावादी कविता में सार्वभौमिकता *तनुजा मजूमदार* 350.00
हिन्दी कहानी : परम्परा और प्रगति *डॉ० हरदयाल* 225.00
कहानी के नये प्रतिमान *कुमार कृष्ण* 225.00
उर्दू पर खुलता दरीचा *गोपीचंद नारंग* 595.00
कहानी : अनुभव और अभिव्यक्ति *राजेन्द्र यादव* 200.00
उपन्यास : स्वरूप और संवेदना *राजेन्द्र यादव* 225.00
रस सिद्धान्त और सौन्दर्यशास्त्र *डॉ० निर्मला जैन* 150.00
कथा सम्राट प्रेमचंद *सं० : प्रवीण उपाध्याय* 750.00
निबन्धकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल *डॉ० कृष्णदेव झारी* 200.00
कृष्ण भक्ति काव्यधारा और कवि *डॉ० कृष्णदेव झारी* 400.00
काव्य मनोविज्ञान *डॉ० कृष्णदेव झारी* 250.00
युग कवि निराला *डॉ० कृष्णदेव झारी* 250.00
कथाकार मुंशी प्रेमचंद *डॉ० कृष्णदेव झारी* 200.00
गाँधीवाद और हिन्दी काव्य *मस्तराम शर्मा* 125.00

इतिहास, राजनीति

औपनिवेशिक भारत में विज्ञान, प्रौद्योगिकी और आयुर्विज्ञान *डैविड आर्नोल्ड* 400.00
आपात काल : एक डायरी (भाग दो) (16.7.1975—24.7.1976) *विशन टंडन* 500.00
लोकतंत्र की चुनौतियाँ *सच्चिदानंद सिन्हा* 200.00
बीच बहस में सेकुलरवाद *अभयकुमार दुबे* 550.00
साम्प्रदायिक राजनीति : तथ्य एवं मिथक *राम पुनियानी* 300.00
स्वतंत्रता-संघर्ष का इतिहास *हजारीप्रसाद द्विवेदी* 30.00

डायरी

ऐन फ्रैंक की डायरी *ऐन फ्रैंक* 300.00

निबन्ध

चिंतन आजकल *सम्पा० : प्रवीण उपाध्याय* 100.00

साक्षात्कार

साक्षात्कार आजकल *सं० : प्रवीण उपाध्याय* 100.00

कहानी

फिज़िक्स कैमिस्ट्री अलजेबरा *मुशर्रफ आलम ज़ौक़ी* 150.00
अमरबेल तथा अन्य कहानियाँ *जया मित्रा* 150.00
किस्सा : एक से एक *डॉ० ब्रजमोहन* 150.00
कहानी आजकल *सम्पा० : उमाकान्त मिश्र* 90.00
लावा *प्रीति श्रीवास्तव* 150.00
आज़ादी मुबारक *कमलेश्वर* 160.00

उपन्यास

जंगली कबूतर *इस्मत चुगताई* 100.00
अन्तर्यात्रा *आमिल* 150.00
कृतिका *इलाकुमार* 125.00
विस्थापित *अमिता शर्मा* 225.00
शहंशाह-ए-तहबाज़ारी *डॉ० शीतांशु भारद्वाज* 250.00
स्वराज्य *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 300.00

जीवनी/साक्षात्कार

स्वराज से लोकनायक : जयप्रकाश नारायण *यशवंत सिन्हा* 2000.00
महाश्वेता संवाद *कृपाशंकर चौबे* 250.00
अमर शहीद भगत सिंह *विष्णु प्रभाकर* 100.00

कविता

पागल गणितज्ञ की कविताएँ *उदयन बाजपेयी* 125.00
कह गया जो आता हूँ अभी *अनिरुद्ध उमर* 125.00
जलती रातों के अलाव *विपुल चतुर्वेदी* 175.00

पत्रकारिता, मीडिया

मीडिया लेखन *सुमित मोहन* 200.00

अध्यात्म

गीता-रहस्य *लोकमान्य बालगंगाधर तिलक* भाग-1 400.00 भाग-2 200.00

व्यंग्य

बंदे आगे भी देख *रामदेव धुरंधर* 250.00
अटैची संस्कृति *अश्विनीकुमार दुबे* 60.00

पुस्तक आज के लिए और सदा के लिए सबसे अच्छी और बड़ी मित्र है। **— टपर**

स्मृति शेष

स्वामी रामसुखदास ब्रह्मलीन

गीता के लब्धकीर्ति भाष्यकार और सुविख्यात प्रवचनकार स्वामी रामसुखदास महाराज 102 वर्ष की आयु में 3 जुलाई को ब्रह्मलीन हो गए। उन्होंने न कोई कुटी बनायी थी, न आश्रम। उन्होंने कभी अपनी फोटो भी नहीं खिंचवायी। उनकी चिताएँ उनके इच्छानुसार सजायी गईं। एक पर उनका पार्थिव शरीर और दूसरी पर उनके उपयोग की सभी वस्तुएँ अग्नि को अर्पित की गईं। जल-समाधि का उन्होंने अपने घोषणा-पत्र में निषेध किया था।

गोरखनाथ : नाथ सम्प्रदाय के परिप्रेक्ष्य में

डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN : 81-7124-430-0
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 250.00

गोरखनाथ एक ऐसा नाम है जो समग्र भारतीय समाज, धर्म और साहित्य में समान भाव से चिरपरिचित और सम्मान्य है। प्राय: सभी भारतीय भाषाओं के साहित्यों में इनसे सम्बन्धित रचनाएँ मिल जाएँगी। उनके शिष्य-प्रशिष्यों की परम्परा में भरथरी, गोपीचंद्र, मयनामती आदि से सम्बन्धित प्रभूत लोक-गाथाएँ उपलब्ध हैं। ये सब गोरखनाथ और उनके सम्प्रदाय की लोकप्रियता और महत्ता के प्रमाण हैं।

गोरखनाथ नवीं शती के उदारचेता, कर्मठ, संगठनकर्त्ता, समाजोद्धारक, लोक-रक्षक, योग-साधना के विशिष्ट पुरस्कर्ता महासिद्ध थे। बौद्धों और शैवों में ही नहीं, शाक्तों और कापालिकों में तथा भोटिया साहित्य में भी इनकी महनीयता स्वीकृत है। भारत के सुदूरवर्ती क्षेत्रों तक की यात्रा करके उन्होंने शैवों का संगठन ही नहीं किया अपितु दलित, पीड़ित और उपेक्षित जनसमाज का उद्धार भी किया। साथ ही, मानवता का संदेश देकर तत्कालीन समाज को स्वस्थ, सबल, चारित्रिक आदर्श के मार्ग पर अग्रसर किया जिस पर चलने के लिए सभी वर्गों और धर्मों के अनुयायियों के लिए द्वार उन्मुक्त था। निस्सन्देह तत्कालीन भारतीय समाज के महनीय धार्मिक, साधनात्मक और चिन्तक मनीषी के रूप में शंकराचार्य के बाद गोरखनाथ का नाम लिया जा सकता है।

डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय ने नाथ सम्प्रदाय और परवर्ती बौद्ध सम्प्रदायों का शोधपूर्ण अध्ययन किया है। इस सम्बन्ध में जो भी सामग्री उपलब्ध है, उसका उन्होंने बड़ी सावधानी से निरीक्षण किया है। गोरक्षनाथ के नाम से प्रचलित भाषा-रचनाओं पर तो उन्होंने विशेष परिश्रम किया है। गोरक्षनाथ अपने काल के परम शक्तिशाली महात्मा थे। उनकी रचनाओं के जो रूप उपलब्ध हैं, वे भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं।

लेखक ने सभी शैलियों की रचनाओं का उत्तम विवेचन किया है। रचनापद्धति और काव्यशैली की दृष्टि से गोरक्षनाथ की रचनाओं में अनेक रूप मिलते हैं।

डॉ० नागेन्द्रनाथ ने अध्यवसायपूर्वक प्रामाणिकता के साथ नाथ सम्प्रदाय के परिप्रेक्ष्य में गोरखनाथ पर यह अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस विषय का यह प्रामाणिक ग्रन्थ है।

पुस्तक समीक्षा

भये कबीर कबीर

शुकदेव सिंह

प्रथम संस्करण : 2005

ISBN : 81-7124-384-3

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी

मूल्य : 250.00

उपर्युक्त शीर्षक जिस 'साखी' का अंश है, उसका पूरा रूप इस प्रकार है—

ना कछु किया न करहिंगे, ना करनै जोग सरीर।
जो कछु किया सु हरि किया, भया कबीर कबीर॥

इस साखी में कबीर का अपने आराध्य के प्रति अखण्ड विश्वास व्यक्त हुआ है। 'कबीर' स्वयं में आखिर क्या था? एक सामान्य मनुष्य। एक साधारण जुलाहा। किन्तु उसके आराध्य ने उसकी अखण्ड निष्ठा से प्रभावित होकर उसे अन्तर्ज्योति प्रदान की। कबीर के ही शब्दों में—

पंजरि प्रेम प्रकासिया, जागी ज्योति अनंत।
संसै खूटा सुख भया, मिला पियारा कंत॥

इसी ज्योति के प्रकाशित होने की स्थिति में कबीर अनुभव करते हैं कि उन्होंने अपने परम प्रियतम से अद्वैतता स्थापित कर ली है और उनके मन के सारे संशय—कहिए द्वैत जनित मानसिक विकार-नष्ट हो गए हैं। कबीर का यही रूप उन्हें अद्वितीयता प्रदान करता है।

डॉ० शुकदेव सिंह ने अपने जीवन का एक बहुत बड़ा भाग कबीर वाणी के भीतर से कबीर के वास्तविक व्यक्तित्व के अनुसन्धान में लगा दिया है। उन्होंने विदेशों में भी उन्हें प्रतिष्ठित किया है। कबीर की वास्तविक वाणी का उन्वेषण भी डॉ० सिंह के अध्ययन की एक प्रमुख दिशा है। यह आकस्मिक नहीं है कि प्रस्तुत कृति में भी कम से कम चार निबन्ध कबीर वाणी के अन्वेषण से समृद्ध हैं।

डॉ० शुकदेव सिंह 'बीजक' की परम्परा को विशेष महत्व देते हैं। उनके शब्द हैं—''साहित्य प्रत्यक्ष तथा साम्प्रदायिक रूप में 'बीजक' में ही मिलता है। गुरु-शिष्य परम्परा अथवा दीक्षा-मंत्र की तरह इस ग्रन्थ को लिख कर देने की परम्परा रही है।'' (पृ० 32)

डॉ० सिंह कबीर के राम को दशरथ-पुत्र नहीं मानते। उनकी मान्यता है कि ''कबीर के 'राम' समपूर्ण भारतीय अस्मिता के प्रतीक हैं। वे सीता पति रघुवंशी नहीं, जन मन में आलोक जागृत करने वाले अर्जस्वित चेतना के प्रतीक हैं।'' (पृ० 109)

डा० सिंह ने कबीर की प्रासंगिकता का प्रश्न भी उठाया है, उनका मानना है—''कबीर की प्रासंगिकता का सवाल सम सामयिक सार्थकता तक ही समाप्त नहीं हो जाता। आज की समाज व्यवस्था को परम्परामुक्त तार्किक स्वरूप देने के लिए जितने संघर्ष आयोजित होंगे उनसे भी कबीर का सम्बन्ध बनता है।'' डॉ० सिंह का अन्तिम वाक्य है—''प्रत्येक मनुष्य को विचार और कर्म का पूरा भाग देने, शोषण-मुक्त करने की लड़ाई जब तक चलती रहेगी, कबीर प्रासंगिक बने रहेंगे।'' (पृ० 76)

'कबीर का जीवन दर्शन और उनकी विश्वचेतना' पर विस्तार से विचार करते हुए डॉ० सिंह कहते हैं—''दूसरे महायुद्ध के बाद विश्व मानवतावाद का अभ्युदय हुआ तो पूँजीवादी प्रसारवाद का एक उपाय बनकर रह गया। मार्क्सवाद की नीति की हार बड़े नकारात्मक ढंग से स्पष्ट हुई। इसलिए यह सपना हो या यूटोपिया कहने में कोई कठिनाई नहीं है, कि साधु विचार, तर्क वाग्मिता और बड़े मनुष्य हितों के लिए कबीर का सन्दर्भ विश्व चेतना का सन्दर्भ हो सकता है। हिंसा ऊधम भरे संगीत, अश्लील अंग प्रदर्शन का हौसला और न बढ़े, इसलिए कबीर की झीनी झीनी बीनी चदरिया का ताना-बाना बुनना जरूरी है। कबीर हर तरह के नंगेपन पर सही-सही पर्दा है।'' (पृ० 50) हो सकता है कबीर हर तरह के नंगेपन पर सही-सही पर्दा हों, किन्तु अपने समय में कबीर ने जितने लोगों को बेनकाब किया है, उतने लोगों को और किसी ने नहीं किया है।

प्रो० सिंह का यह भी मानना है कि ''वस्तुत: मानस 'बीजक' के प्रत्युत्तर में लिखा गया''। 'मानस' 'बीजक' के प्रत्युत्तर में नहीं, पूरी निर्गुण उपासना परम्परा के प्रत्युत्तर में लिखा गया है। आप 'कबीर' के प्रत्युत्तर में चाहें तो कह सकते हैं। यह प्रश्न तुलसी ही नहीं, सूर के सामने भी था। सूर तो तुलसी से कुछ बड़े ही थे। उन्होंने जनता की कठिनाई को अनुभव करते हुए लिखा है—

रूप-रेख गुण जाति जुगुति-विनु,
निरालंब मन चक्रित धावै
सब विधि अगम विचारहिं तातैं,
सूर सगुन लीला पद गावै।

यह प्रश्न युग-प्रश्न था। सूर और तुलसी ने अपने-अपने तरीके से इसका उत्तर दिया।

डॉ० सिंह का यह भी मानना है कि कबीर आदि संत 'ज्योतिवादी' हैं, रहस्यवादी नहीं। रहस्यवाद शब्द बाद को प्रचलित हुआ है। यहाँ ज्यादा बस की गुंजाइश नहीं है। कबीर ने बार-बार अन्त:करण में ज्योति के प्रकाशित होने और पारब्रह्म के तेज की बात कही है।

अन्त में हम यह कहना चाहेंगे कि इधर उनके प्रयत्नों और कबीर की अपनी विशेषताओं के चलते जो नये कार्य हुए हैं, या हो रहे हैं उन पर भी एक छोटा सा सूचनात्मक अध्याय दे देते तो हम जैसे कबीर के विद्यार्थियों का बड़ा उपकार होता। डॉ० सिंह के लिए यह बहुत आसान था। विशेषत: कबीर वाणी के जो सम्पादन वहाँ हुए हैं, वे अत्यन्त उपयोगी।

सब मिलाकर डॉ० सिंह की यह पुस्तक उनके गौरव के अनुकूल है। यत्र-तत्र मतभेद हो सकते हैं किन्तु यह स्वाभाविक है। जिस दिन मतभेद समाप्त हो जायगा उस दिन चिन्तन की परम्परा भी समाप्त हो जायगी।

—रामचन्द्र तिवारी

ध्वन्यालोक:

(दीपशिखाटीका सहित)

आचार्य
चण्डिकाप्रसाद शुक्ल

प्रथम संस्करण : 2005

ISBN : 81-7124-438-6

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी

मूल्य : 200.00

'ध्वन्यालोक' संस्कृत साहित्यशास्त्र का युगप्रवर्तक ग्रन्थ है। साहित्यशास्त्र में इस ग्रन्थ का वही स्थान है जो व्याकरणशास्त्र में पाणिनी की अष्टाध्यायी का तथा वेदान्तदर्शन में वादरायाण के ब्रह्मसूत्रों का।

विगत एक सहस्रवर्षों से साहित्य अध्येता 'आलोक' के प्रति 'लोचनान्ध' ही रहे। फलत: 'ध्वन्यालोक' को एक कठोर ग्रन्थ समझा जाता रहा। 'लोचन' ध्वनि के विषय में स्वयं एक भ्रान्त धारणा रही है। किन्तु इस 'दीपशिखा' से 'आलोक' का यथार्थ रूप सहृदयों के समक्ष दिखाई पड़ा। वस्तुत: 'दीपशिखा' द्वारा व्याख्यात ध्वनि ही आनन्दवर्धन की प्रतिष्ठापित, मम्मट की सम्मत तथा पण्डितराज जगन्नाथ की अभिमत ध्वनि है—'ध्वनिस्तु काव्यमेवास्ति न व्यङ्ग्यं न च व्यञ्जना।' विदग्ध विद्वानों ने इसके प्रथम संस्करण का स्वागत किया। यह द्वितीय संस्करण पूर्णतया संशोधित तथा परिवर्धित है। इसकी भूमिका (ध्वनि-पस्पशा) भी अत्यन्त उपयोगी है। पूरा ग्रन्थ प्रसन्न गम्भीर यथार्थ व्याख्या से सर्वथा परिष्कृत एवं समृद्ध है।

सम्पूर्ण पत्रकारिता

डॉ० अर्जुन तिवारी

प्रथम संस्करण : 2005

PAPERBACK
ISBN : 81-7124-412-2

HARDBOUND
ISBN : 81-7124-411-2

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी

मूल्य : अजिल्द : 280.00 सजिल्द : 400.00

भगवद्गीता

(नाट्य रूप)

डॉ० प्रमोदकुमार अग्रवाल

प्रकाशक

पीताम्बरा बुक्स प्राइवेट लि०
बी-95, इण्डस्ट्रियल एरिया
बिजौली, झाँसी

मूल्य : 200.00

दुनियां की शायद ही कोई भाषा बची हो जिसमें 'गीता' का अनुवाद न हुआ है। हमारी जानकारी के अनुसार अब तक इस ग्रन्थ के तीन हजार अनुवाद या टीकाएँ या विश्लेषणात्मक भाष्य प्रकाशित हो चुके हैं। प्रस्तुत पुस्तक के रचनाकार ने आधुनिकता के आलोक में नयी पीढ़ी के युवकों के लिए 'गीता' का नाट्य-रूप प्रस्तुत कर प्रशंसनीय कार्य किया है। नाट्य-रूप में पाँच पात्र हैं—श्रीकृष्ण, अर्जुन, धृतराष्ट्र, संजय और दुर्योधन। कर्म-सिद्धान्त 'गीता' का सन्देश है। भगवान् श्रीकृष्ण ने 'गीता' में अपने सखा अर्जुन से कहा—''मैं तेरे लिए यह वैज्ञानिक ज्ञान सम्पूर्ण से कहूँगा जिसको जानकर संसार में फिर कुछ जानने योग्य शेष नहीं रह जाता।'' पुस्तक के लेखक डॉ० प्रमोद कुमार अग्रवाल सम्प्रति पश्चिम बंगाल शासन में प्रधान सचिव हैं। पुस्तक पठनीय और संग्रहणीय है। **—पानासि**

प्राण-काव्य एक अभिव्यक्ति

मनोज ठक्कर

प्रकाशक

शिव ऊँ साँई प्रकाशन
95/3 वल्लभ नगर
इन्दौर - 452 003

मूल्य : 110.00

यह एक काव्य कृति नहीं गद्य कृति है। बच्चन की 'मधुशाला' से प्रभावित प्राणकाव्य में भावुकतापूर्ण आध्यात्मिक चेतना की अभिव्यक्ति है। यह कृति गद्य में काव्यात्मक रसमयता से जीवन दर्शन का बोध कराती है। लेखक कविवर बच्चन की रसमय भावुकता, साईं बाबा की भक्ति, कबीर की तेजस्विता और लाहिड़ी महाशय की अलौकिकता से प्रभावित है।

औरत को समझने के लिए

डॉ० श्याम सखा 'श्याम'

प्रकाशक : प्रयास ट्रस्ट
12, विकास नगर, रोहतक

मूल्य : 40.00

प्रस्तुत कविता-पुस्तक के कवि डॉ० श्याम सखा 'श्याम' रससिक्त, भावुक और काल-प्रवाह के अनुभवी कलाकार हैं। स्त्री, माता, बहन और पत्नी के रूप में स्त्रियाँ पुरुष की जीवन-यात्रा आनन्दमय बनाने में सार्थक भूमिका बनाती हैं। कवि श्याम ने स्त्री के विभिन्न रूपों को सही अन्दाज में देखा, परखा और सहज अनुभूतियों से चित्रित किया है। पुस्तक की हर कविता नयी बानगी लेकर उपस्थित होती है और मन को तरंगित करती है। पुस्तक पठनीय ही नहीं, संग्रहणीय है। कवि ने अबूझ निरूपित करते हुए भी स्त्री के अस्तित्व रूपी पहेली को बूझने का अपनी कविताओं के माध्यम से सार्थक प्रयास किया है। **—पानासि**

एकनाथी भागवत

ना०वि० सप्रे

प्रथम संस्करण : 2005

ISBN : 81-7124-402-5

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी

मूल्य : 600.00

भारतीय वाङ्मय के पाठकों से

'भारतीय वाङ्मय' अनेक पाठकों को नि:शुल्क सुलभ कराया जाता रहा है, किन्तु अब यह सम्भव नहीं हो पा रहा है। सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वार्षिक शुल्क 50 रुपये भेजकर सहयोग करें। **—प्रकाशक**

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 6 **सितम्बर 2005** **अंक : 9**

प्रधान सम्पादक

पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक

परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी

द्वारा मुद्रित

E-mail : sales@vvpbooks.com
Website : **www.vvpbooks.com**

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎: Off.(0542)2421472,2413741,2413082,(Resi.)2436349,2436498,2311423 ●Fax(0542)2413082